हिंदी

सुगमभारती

आठवीं कक्षा

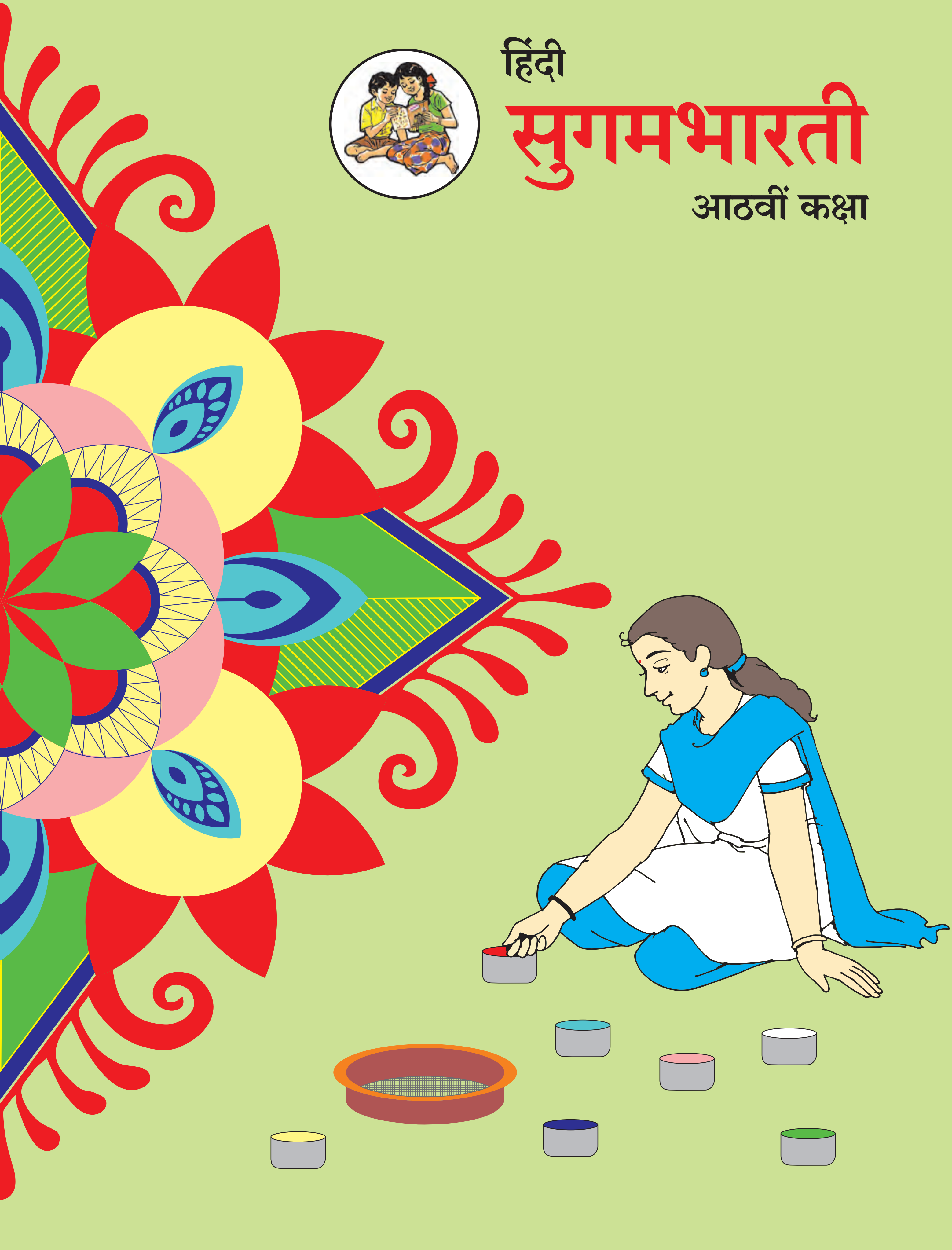

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति आठवीं कक्षा

यह अपेक्षा है कि आठवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित अध्ययन निष्पत्ति विकसित हो ।

विद्‌यार्थी –

08.LB.01	विविध विषयों पर आधारित पाठ्‌यसामग्री और साहित्य की दृष्टि से विचार पढ़कर चर्चा करते हुए द्रुत वाचन करते हैं तथा आशय को समझते हुए मानक लेखन तथा केंद्रीय भाव को लिखते हैं ।
08.LB.02	हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर तथा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं, सर्वेक्षण, टिप्पणी आदि को प्रस्तुत कर उपलब्ध जानकारी का योग्य संकलन, संपादन करते हुए लेखन करते हैं ।
08.LB.03	पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हुए गुट चर्चा में सहभागी होकर उसमें आए विशेष उद्‌धरणों, वाक्यों का अपने बोलचाल तथा संभाषण में प्रयोग कर परिचर्चा, भाषण आदि में अपने विचारों को मौखिक/लिखित ढंग से व्यक्त करते हैं ।
08.LB.04	किसी सुनी हुई कहानी, विचार, तर्क प्रसंग आदि के भावी प्रसंगों का अर्थ समझते हुए आगामी घटना का अनुमान करते हैं, विशेष बिंदुओं को खोजकर उसका संकलन करते हैं ।
08.LB.05	पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं तथा किसी परिचित/अपरिचित के साक्षात्कार हेतु प्रश्न निर्मिति करते हैं तथा किसी अनुच्छेद का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करते हैं ।
08.LB.06	विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त उपयोगी / आलंकारिक शब्द, महान विभूतियों के कथन, मुहावरों / लोकोक्तियों–कहावतों, परिभाषाएँ, सूत्र आदि को समझते हुए सूची बनाते हैं तथा विविध तकनीकों का प्रयोग करके अपने लेखन को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करते हैं ।
08.LB.07	अपने पाठक और लिखने एवं लिखित सामग्री के उद्‌देश्य और अन्य दृष्टिकोण के मुद्‌दों को समझकर उसे प्रभावी तरीके से लिखते हैं ।
08.LB.08	सुने हुए कार्यक्रम के तथ्यों, मुख्य बिंदुओं, विवरणों एवं पठनीय सामग्री में वर्णित आशय के वाक्यों एवं मुद्‌दों का तार्किक एवं सुसंगति से पुन:स्मरण कर वाचन करते हैं तथा उनपर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं ।
08.LB.09	भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का यथावत वर्णन, उचित विराम, बलाघात, तान–अनुतान के साथ शुद्‌ध उच्चारण, आरोह–अवरोह, लय–ताल को एकाग्रता से सुनते एवं सुनाते हैं तथा पठन सामग्री में अंतर्निहित आशय केंद्रित भाव अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

सुगमभारती

आठवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

HULPKP

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१८
दूसरा पुनर्मुद्रण : २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

मुख्य समन्वयक
श्रीमती प्राची रविंद्र साठे

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्‌य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्‌दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री रामहित यादव - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री संजय भारद्‌वाज
सौ. वृंदा कुलकर्णी
सौ. रंजना पिंगळे
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ. शुभदा मोघे
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती शारदा बियानी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. वर्षा पुनवटकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शैला ललवाणी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

निमंत्रित सदस्य
श्री ता.का सूर्यवंशी
श्रीमती उमा ढेरे

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्‌यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्‌यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : अपूर्वा मिलिंद बारंगळे
चित्रांकन : मयूरा डफळ, श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगॉवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश :
मुद्रक :

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

तुम सब पाँचवीं से सातवीं कक्षा की हिंदी सुगमभारती पाठ्‌यपुस्तक से अच्छी तरह परिचित हो और अब आठवीं हिंदी सुगमभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंग-बिरंगी, अतिआकर्षक यह पुस्तक तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि तुम्हें कविता, गीत, गजल सुनना-पढ़ना प्रिय लगता है । कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । तुम्हारी इन भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पाठ्‌यपुस्तक में कविता, गीत, गजल, पद, दोहे, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, लघुकथा, निबंध, हास्यकथा, संस्मरण, आधुनिक गीत, खंडकाव्य अंश, यात्रावर्णन, एकांकी, महाकाव्य अंश, भाषण, पत्र आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । ये विधाएँ मनोरंजक होने के साथ-साथ ज्ञानार्जन, भाषाई कौशल-क्षमताओं के विकास, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक होंगी । इन रचनाओं के चयन के समय आयु, रुचि, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्तर का सजगता से ध्यान रखा गया है ।

अंतरजाल एवं डिजिटल दुनिया के प्रभाव, नई शैक्षिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टि को समक्ष रखकर ‘श्रवणीय’, ‘संभाषणीय’ ‘पठनीय’, ‘लेखनीय’, ‘मैंने समझा’, ‘कृति पूर्ण करो’, ‘भाषा बिंदु’ आदि के माध्यम से पाठ्‌यक्रम को पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारी कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता को ध्यान में रखते हुए ‘स्वयं अध्ययन’, ‘उपयोजित लेखन’, ‘मौलिक सृजन’, ‘कल्पना पल्लवन’ आदि कृतियों को अधिक व्यापक एवं रोचक बनाया गया है । इनका सतत अभ्यास एवं उपयोग अपेक्षित है । मार्गदर्शक का सहयोग लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग को सहज और सुगम बना देता है । अतः अध्ययन अनुभव की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग और मार्गदर्शन तुम्हारे लिए निश्चित ही सहायक सिद्‌ध होंगे ।

आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि तुम सब पाठ्‌यपुस्तक का समुचित उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि दिखाते हुए आत्मीयता के साथ इसका स्वागत करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ अप्रैल २०१८, अक्षयतृतीया
भारतीय सौर : २९ चैत्र १९४०

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	हृदय का उजाला	गीत	रमाकांत यादव	१-२
२.	उसी से ठंडा, उसी से गरम	हास्य कथा	डॉ. जाकिर हुसैन	३-५
३.	गाना-बजाना	विवरणात्मक निबंध	रामवृक्ष बेनीपुरी	६-८
४.	श्रद्‌धा और प्रयास	पत्र	काका कालेलकर	९-११
५.	सुनो और गुनो	आधुनिक दोहे	गोपालदास सक्सेना 'नीरज'	१२-१३
६.	और प्रेमचंद जी चले गए	संस्मरण	डॉ. रामकुमार वर्मा	१४-१६
७.	हींगवाला	संवादात्मक कहानी	सुभद्राकुमारी चौहान	१७-२०
८.	कदम मिलाकर चलना होगा	नवगीत	अटलबिहारी वाजपेयी	२१-२२

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	पंपासर	खंडकाव्य का अंश	नरेश मेहता	२३-२४
२.	परोपकार	लघुकथा	श्रीकृष्ण	२५-२६
३.	आत्मनिर्भरता	वैचारिक निबंध	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	२७-२९
४.	तुम मुझे खून दो	भाषण	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	३०-३२
५.	संतवाणी	पद (महाकाव्य का अंश)	संत मीराबाई गोस्वामी तुलसीदास	३३-३४
६.	प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण 'अल्मोड़ा'	यात्रा वर्णन	डॉ. इसरार 'गुनेश'	३५-३७
७.	सम्मेलन अंगों का	एकांकी	श्रीप्रसाद	३८-४०
८.	जिंदगी का सफर	गजल	नंदलाल पाठक	४१-४२
	व्याकरण तथा रचना विभाग एवं भावार्थ			४३-४६

१. हृदय का उजाला

– *रमाकांत यादव*

जलाते हो क्यों तुम दीप स्नेह भर-भर,
अपने दिलों के दीप तो जलाओ ।
सजाते हो तुम सब उजालों से घर क्यों,
अँधेरे हृदय में उजाला तो लाओ ।

कहीं तो दीवाली, कहीं सूनापन है,
कहीं झूमें खुशियाँ कहीं गम ही गम है,
उन दीन-दुखियों के दुख को मिटाओ,
अपने दिलों के दीप तो जलाओ ।

न फुलझड़ियाँ चमकाओ, न फोड़ो पटाखे,
भोजन नहीं जिनके, दे आओ जा के ।
उनके जखमों पर मलहम लगाओ,
अपने दिलों का दीप तो जलाओ ।

जला दीप तुमने अँधेरा मिटाया,
पर क्या किसी भूखे को भोजन कराया ?
उजालों की चाहत कभी न रही जिनकी,
रोटी तुम उनको जाकर खिलाओ ।

पहला ही दीपक बहुत है अँधेरे को,
अनगिन दीप मिल न दिल को सजाते ।
उनके दिलों से पूछो तो जाकर,
जखमों पर स्नेहक जो लगा तक न पाते ।

बुझे दिल में उनके ज्योति जलाओ,
अँधेरे हृदय में उजाला तो लाओ ।

—०—

परिचय

जन्म : १९६३, जौनपुर (उ.प्र.)
परिचय : रमाकांत यादव जी हिंदी भाषा के सजग रचनाकार हैं । आपकी रचनाएँ राष्ट्रीयता और नैतिकता के भावों से परिपूर्ण हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हृदय का उजाला', 'यह समय कब तक रहेगा', 'गीत जिंदगी के', 'अपनापन' आदि रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवि रमाकांत यादव जी ने हमें दीपक जैसा बनने के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि त्योहारों, उत्सवों के अवसर पर दिखावा करने की जगह भूखे पेट को भोजन, खुले तन को वस्त्र देना, दीन-दुखियों की सेवा करना अधिक श्रेष्ठ है ।

शब्द वाटिका

गम = दुख
चाहत = अभिलाषा, इच्छा
अनगिन = जो गिना नहीं जाता, असंख्य
स्नेहक = स्नेह का मरहम या लेप

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो :

१. मिटाना है -------- को ।
२. उजाला लाना है -------- में ।
३. भोजन कराना है -------- को ।
४. ज्योति जलानी है -------- में ।

(२) कविता में आए दीवाली से संबंधित दो शब्द लिखो :

(३) वाक्य के सामने सही अथवा गलत लिखो :

१. कवि ने हमें अपने दिलों के दीप जलाने के लिए कहा है ।
२. कवि ने दीन-दुखियों को दुख देने के लिए कहा है ।

कल्पना पल्लवन

'दीन-दुखियों का दुख दूर करना चाहिए' विषय पर अपने विचार संक्षेप में लिखो ।

भाषा बिंदु

समानार्थी शब्द लिखो :

दीपक =	आनंद =
हृदय =	घाव =
लाचार =	घर =

उपयोजित लेखन

विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई विविध हस्तकला वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाने एवं विक्री करने हेतु निर्देशानुसार आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

हस्तकला की विभिन्न वस्तुएँ
स्थान-समय
द्वारा-विद्यार्थी कलामंडल

I3LGEU

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

त्योहार मनाते समय प्रदूषण की रोकथाम हेतु आवश्यक सूचनाओं का चार्ट तैयार करो ।

२. उसी से ठंडा, उसी से गरम

– डॉ. जाकिर हुसैन

एक लकड़हारा था । जंगल में जाकर रोज लकड़ियाँ काटता और शहर में जाकर शाम को बेच देता था । एक दिन इस ख्याल से कि आस-पास से तो सब लकड़हारे लकड़ी काट ले जाते हैं । सूखी लकड़ी आसानी से मिलती नहीं इसलिए वह दूर जंगल के अंदर चला गया । सरदी का मौसम था । कड़ाके का जाड़ा पड़ रह था । हाथ-पाँव ठिठुरे जाते थे । उसकी उँगलियाँ बिलकुल सुन्न हुई जाती थीं । वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद कुल्हाड़ी रख देता और दोनों हाथ मुँह के पास ले जाकर खूब जोर से उसमें फूँक मारता कि गरम हो जाएँ ।

जंगल में न मालूम किस-किस तरह के जीव रहते हैं । सुना है, उनमें छोटे-छोटे बालिश्त भर के आदमी भी होते हैं । उनके दाढ़ी, मुँह आदि सब कुछ होते हैं मगर होते हैं बस खूँटी ही-से । हम-तुम जैसा कोई आदमी उनकी बस्ती में चला जाए तो उसे बड़ी हैरत से देखते हैं कि यह करता क्या है । लेकिन वे हम लोगों से जरा अच्छे होते हैं क्योंकि उनके लड़के किसी परदेशी को सताते नहीं, न तालियाँ बजाते हैं और न पत्थर फेंकते हैं । खुद हमारे यहाँ भी अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते लेकिन उनके यहाँ तो सभी अच्छे होते हैं ।

खैर, लकड़हारा जंगल में लकड़ियाँ बीन रहा था तो एक मियाँ बालिश्तिये भी कहीं बैठे उसे देख रहे थे । मियाँ बालिश्तिये ने जो देखा कि यह बार-बार हाथ में कुछ फूँकता है तो सोचने लगे कि यह क्या बात है । जब कुछ समझ में न आया तो वे अपनी जगह से उठे और कुछ दूर चलकर फिर लौट आए । मालूम नहीं पूछने से यह आदमी कहीं बुरा न माने । मगर फिर न रहा गया । आखिर ठुमक-ठुमककर लकड़हारे के पास गए और कहा, ''सलाम भाई, बुरा न मानो, तो एक बात पूछूँ ?''

लकड़हारे को जरा-से अँगूठे बराबर आदमी को देखकर ताज्जुब भी हुआ, हँसी भी आई । मगर उसने हँसी रोककर कहा, ''हाँ-हाँ, भई जरूर पूछो ।'' ''बस, यह पूछता हूँ कि तुम मुँह से हाथ में फूँक-सी क्यों मारते हो ?'' लकड़हारे ने जवाब दिया, ''सरदी बहुत है । हाथ ठिठुरे जाते हैं । मैं मुँह से फूँककर उन्हें जरा गरमा लेता हूँ । फिर ठिठुरने लगते हैं, फिर फूँक लेता हूँ ।''

मियाँ बालिश्तिये ने अपना सुपारी जैसा सिर हिलाया और कहा, ''अच्छा, यह बात है ।'' यह कहकर वहाँ से खिसक गए, मगर रहे

परिचय

जन्म : १८९७, हैदराबाद (तेलंगाना)
मृत्यु : १९६९ (दिल्ली)
परिचय : डॉ. जाकिर हुसैन जी स्वतंत्र भारत के तृतीय राष्ट्रपति, विद्‌वान तथा शिक्षाविद हैं । आधुनिक भारत के विकास में आपका अनमोल योगदान रहा है । आप राष्ट्रप्रेम, आधुनिकता, वैश्वीकरण, भाषा, संस्कृति, शिक्षा और इतिहास विषयों से गहरे जुड़े रहे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'तालीमी खुतबत', 'लिटिल चिकेन इन हरी', 'सियासत और मासियत', 'बुनियादी कौमी तालीम', 'अब्बू खाँ की बकरी' और 'चौदह कहानियाँ' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत हास्यकथा में डॉ. जाकिर हुसैन जी ने बड़े ही मनोरंजक ढंग से लकड़हारे और बालिश्तिये की कहानी लिखी है । इस कथा के माध्यम से आपने किसी अपरिचित को न सताने, किसी की हँसी न उड़ाने, किसी पर पत्थर न फेंकने का संदेश दिया है । यहाँ आपने सभी को अच्छा बनने के लिए प्रेरित किया है ।

संभाषणीय

भाव-भंगिमाओं के आधार पर हँसने के अलग-अलग प्रकार बताओ और अभिनय सहित प्रस्तुत करो । उदा; खिलखिलाना ।

लेखनीय

प्रसार माध्यम से राष्ट्रीय प्रसंग-घटना संबंधी वर्णन पढ़ो और अपने विचार लिखो ।

पठनीय

सुने-देखे, पढ़े आशय के वाक्यों एवं मुद्दों का पुनःस्मरण करते हुए वाचन करो ।

श्रवणीय

प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री सत्येंद्रनाथ बोस की जानकारी रेडियो/ टीवी/ यू ट्यूब पर सुनो ।

आस-पास ही और कहीं से बैठे बराबर देखते रहे कि लकड़हारा और क्या-क्या करता है ।

दोपहर का वक्त आया । लकड़हारे को खाना पकाने की फिक्र हुई । उसके पास छोटी-सी हाँड़ी थी । आग सुलगाकर उसे चूल्हे पर रखा और उसमें आलू उबालने के लिए रख दिए । गीली लकड़ी थी इसलिए आग बार-बार ठंडी हो जाती तो लकड़हारा मुँह से फूँककर तेज कर देता था । बालिश्तिये ने दूर से देखकर अपने जी में कहा-अब यह फिर फूँकता है । क्या इसके मुँह से आग निकलती है ? मगर चुपचाप बैठा देखता गया । लकड़हारे को भूख ज्यादा लगी थी इसलिए चढ़ी हुई हाँड़ी में से एक आलू, जो अभी पूरे तौर पर पका भी न था, निकाल लिया । उसे खाना चाहा तो वह ऐसा गरम था जैसे आग । उसने मुश्किल से उसे अपनी एक उँगली और अँगूठे से दबाकर तोड़ा और मुँह से 'फूँ-फूँ' करके फूँकने लगा ।

बालिश्तिये ने फिर मन में कहा-यह फिर फूँकता है । अब क्या इस आलू को फूँककर जलाएगा । लेकिन आलू जला-वला कुछ नहीं । थोड़ी देर 'फूँ-फूँ' करके लकड़हारे ने उसे अपने मुँह में रख लिया और गप-गप खाने लगा । अब तो इस बालिश्तिये की हैरानी का हाल न पूछो । वह ठुमक-ठुमककर फिर लकड़हारे के पास आया और बोला, ''सलाम भाई, बुरा न मानो तो एक बात पूछूँ ?'' लकड़हारे ने कहा, ''बुरा क्यों मानूँगा, पूछो ।''

बालिश्तिये ने कहा, ''अब इस आलू को क्यों फूँकते थे ? यह तो खुद बहुत गरम था । इसे और गरमाने से क्या फायदा ?'' ''नहीं मियाँ । यह आलू बहुत गरम है । मैं इसे मुँह से फूँककर ठंडा कर रहा हूँ ।''

यह सुनकर मियाँ बालिश्तिये का मुँह पीला पड़ गया । वे डर के मारे थर-थर काँपने लगे । बराबर पीछे हटते जाते थे । जरा-सा आदमी यों ही देखकर हँसी आए लेकिन इस थर-थर, कँप-कँप की हालत में देखकर तो हर किसी को हँसी भी आए, रंज भी हो । उसने आखिर पूछा, ''क्यों मियाँ, क्या हुआ ? क्या जाड़ा बहुत लग रहा है ?'' मगर मियाँ बालिश्तिये जब काफी दूर हो गए तो बोले, ''यह न जाने क्या बला है ? शायद कोई जादूगर है । उसी से ठंडा, उसी से गरम । हमारी समझ में यह बात नहीं आती ।'' सच तो ये है यही बात उन मियाँ बालिश्तिये की नन्हीं-सी खोपड़ी में आने की थी भी नहीं ।

—०—

शब्द वाटिका

ठिठुरना = ठंड से काँपना
सुन्न = संवेदनारहित
बालिश्त = अँगूठे के सिरे से लेकर कनिष्ठिका के सिरे तक की लंबाई, बित्ता
बालिश्तिया = छोटे कद का आदमी
ताज्जुब = आश्चर्य
सहम जाना = घबरा जाना
रंज = दुख

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

बालिश्तियों की विशेषताएँ

________ ________ ________ ________

(२) उत्तर लिखो :

.... पाठ में प्रयुक्त सरदी से संबंधित शब्द ....

(३) निम्नलिखित कथनों में से असत्य कथन को सुधारकर फिर से लिखो :

१. बालिश्तिये को खाना बनाने की फिक्र हुई ।
२. सरदी के कारण लकड़हारे के हाथ ठिठुरे जाते हैं ।
३. लकड़हारा एक भलामानस था ।
४. बालिश्तिये के पास एक छोटी हाँड़ी थी ।

भाषा बिंदु

(अ) दिए गए शब्दों का वचन परिवर्तन करके अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

शब्द	वचन परिवर्तन	वाक्य
दीवार	----------	________
महिला	----------	________
लकड़हारे	----------	________
ऊँगलियाँ	----------	________
हाथ	----------	________

(आ) पाठों मे प्रयुक्त सहायक क्रिया के वाक्य ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन

वृक्ष और पंछी के बीच का संवाद लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

व्यसन से सावधान करने वाले पोस्टर बनाओ ।

३. गाना-बजाना

- रामवृक्ष बेनीपुरी

परिचय

जन्म : १८९९, मुजफ्फरपुर (बिहार)
मृत्यु : १९६८ (बिहार)
परिचय : रामवृक्ष बेनीपुरी जी बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी और यशस्वी रचनाकार हैं। निबंधकार के रूप में आप प्रसिद्ध हैं।
प्रमुख कृतियाँ : 'अमर ज्योति', 'तथागत' (नाटक), 'माटी', 'गेहूँ और गुलाब' (निबंध), 'पतितों के देश में', 'कैदी की पत्नी' (उपन्यास), 'चिता के फूल', 'जीवन तरु', (कहानी संग्रह), 'पैरों में पंख बाँधकर' (यात्रा साहित्य), 'माटी की मूरतें', 'लाल तारा' (शब्दचित्र संग्रह), 'नया आदमी' (कविता संग्रह) आदि।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत निबंध में लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने विविध देशों के वाद्यों एवं उनके बजाने के ढंग का वर्णन किया है। आपका मानना है कि गाने-बजाने का शौक सभी देशों के निवासियों में होता है।

मौलिक सृजन

यू ट्यूब अथवा पुस्तक के आधार पर वाद्यों का संक्षेप में वर्णन लिखो।

पी-पी-पू-पू !

कोई बच्चा बेतहाशा रो रहा है। चुप कराने की कितनी भी कोशिश आप कर रहे हैं, वह चुप नहीं होता। बस आप एक पिपुही लेकर उसके नजदीक बजा दीजिए, वह चुप। शायद मुसकरा भी पड़े और उसे लेने के लिए जिद तो करेगा ही।

बाजे में यह करामात है ही। लोगों का तो कहना है कि जिस समय मनुष्य जाति अपने बचपन में रही होगी, विद्या-बुद्धि का आज जैसा विकास नहीं हुआ होगा; उस समय भी उसमें गाने-बजाने का शौक जरूर हुआ होगा। गाने के जरिये हम अपने दिल के उच्छ्‌वास को प्रकट करते हैं, बाजा उस गाने को भड़कदार और दिलचस्प बना देता है। आज संसार के पिछड़े-से-पिछड़े देश में जाइए, आप वहाँ गाना-बजाना जरूर पाएँगे !

पहले कौन-सा बाजा बना होगा, इसका अंदाज लगाने वाले कहते हैं कि पहले कई चीजों को इकट्‌ठा कर, उन्हें पीट-पीटकर शब्द निकालने की चेष्टा की गई होगी। मरे हुए पशुओं के चमड़े को पोपले कद्‌दू पर मढ़कर ढोल और नरकट की गाँठों को छेदकर उससे पिपुही बना ली गई होगी। किसी पोपली चीज में छोटे-छोटे कंकड़ रखकर उसे हिलाने-डुलाने पर एक प्रकार का स्वर निकलते देखकर झुनझुना बनाने की कल्पना की गई होगी। आज भी बहुत से देशों में तीन बाजे हैं- ढोल, पिपुही और झुनझुना; चाहे उनका आकार-प्रकार अलग हो। इन तीनों के सहारे ही नाना तरह के स्वर निकाले जाते हैं।

वनवासी लोगों के गाने-बजाने को गौर से सुनने पर मालूम होता है कि उनमें 'ताल' पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, 'सुर' पर कम। अमेरिका के रेड इंडियनों को देखिए या अफ्रीका के हब्शी लोगों को, गाने बजाने में ताल की ही प्रमुखता उनके यहाँ है। रेड इंडियनों का टमटम और हब्शी लोगों का ढोल, ताल ही देता है। हब्शी लोग तो ढोल बजाने में इतने उस्ताद हैं कि उन्होंने ढोल की भाषा का ईजाद कर लिया है। एक जगह कोई ढोल बजा रहा है- दूसरा मीलों की दूरी पर बैठा उस ढोल को सुनकर समझ लेता है कि वह क्या कह रहा है।

गाने-बजाने का शौक जैसा कि कहा गया है, पिछड़े-से-पिछड़े देश के लोगों में भी है। मध्य अफ्रीका के लोग खूब गाते-बजाते हैं और उनका गवैया दल जहाँ जाता है, उसे पूरा सम्मान मिलता है किंतु वहाँ के

गवैयों पर एक आफत भी है । किंवदंती है कि जो सबसे अच्छा गाता था, राजा उसकी आँखें निकलवा लेता था, जिससे गवैया राज्य छोड़कर दूर देश न चला जाए ।

हर पूर्वी देश का एक-न-एक बाजा मशहूर है । जिस प्रकार भारत में 'वीणा' प्रसिद्ध है । हमारी सरस्वती देवी भी वीणा ही बजाती हैं । इसे भारत का राष्ट्रीय बाजा समझा जा सकता है । चीन के ऐसे बाजे का नाम 'राजा' है । एक काठ का तख्ता लटका रहता है, जिसपर सोलह पत्थर के टुकड़े दो पंक्तियों में सजाए रहते हैं, जिनपर एक काठ की मुँगरी से हलके-हलके मारकर नाना तरह के स्वर निकालते हैं । बर्मा में एक तरह की 'ढोल तरंग' बनाई जाती है । भिन्न-भिन्न आकार के इक्कीस ढोलों को अर्ध वृत्ताकार में रखते हैं और बजाने वाला उसके बीच में बैठकर या खड़े होकर उन्हें बजाता है। जापानी लोग बाँस के पोपले टुकड़ों को क्रम से रखकर, उन्हें पीटकर एक प्रकार की दिलचस्प स्वर तरंग निकालते हैं- जिसे 'ऐंगलौंग' कहते हैं। जापान में, भारत के ही समान, तार के संयोग से बने बाजों की भी बड़ी कदर है । सितार, सारंगी, वीणा ऐसे बहुत से तारवाले बाजे वहाँ हैं ।

उत्तरी अमेरिका के रेडस्किन जाति के मस्त गवैये होते हैं । उनके पास केवल तीन ही बाजे होते हैं-ढोल, पिपुही और झुनझुना-किंतु इन्हीं के सहारे वे बड़े मजे ले गा लेते हैं । अमेरिका के कुछ आदिनिवासी एक विचित्र ढंग के ढोल का प्रयोग करते हैं । एक छोटे से ढोल में पानी रख देते हैं । अपने स्वर के अनुसार बनाने के लिए गवैये बार-बार उसके पानी को कम या बेशी करते हैं ।

कुछ बाजे तो खूब ही विचित्र होते हैं । न्यासालैंड टापू के गवैये एक प्रकार का बाजा बजाते हैं, जिसे 'बाजों की खिचड़ी' कहा जा सकता है । पैर में अखरोट के छिलके बँधे रहते हैं, जिनके भीतर पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े होते हैं। हाथ में एक तारवाला बाजा रहता है, जिसके सिरे से घंटी लटकती रहती है । जब वे गाते हैं, एक ही साथ झुनझुने, घंटी और तार की आवाज निकलती है। फिजी के आदि अधिवासी एक लंबी-सी बंशी अपनी नाक से बजाते हैं। मलाया में भी ऐसी विचित्र बंशी देखी जाती है । मैक्सिको में जो काठ के 'मरिंबा' का प्रयोग किया जाता है, उसपर एक साथ ही चार-चार आदमी तक बजा लेते हैं। हमारे देश का सिंगा भी दूसरे देशवासियों के लिए कुछ कम आश्चर्यजनक बाजा नहीं है ।

——०——

श्रवणीय

दूरदर्शन पर किसी संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुत किए जाने वाले गीत सुनो ।

संभाषणीय

कक्षा में किसी त्योहार को मनाने की पद्धति, अलग-अलग परिवारों के रीति-रिवाजों के बारे में गुट चर्चा करो ।

लेखनीय

'मेरा प्रिय प्रार्थना गीत' विषय पर लगभग दस वाक्यों में शुद्ध एवं मानक लेखन करो ।

पठनीय

किसी कहानी या लघुकथा का मौन एवं मुखर वाचन करो ।

शब्द वाटिका

बेतहाशा = असीमित
पिपुही = छोटी बाँसुरी, पिपहरी
नरकट = पतली गाँठदार बेंत
ईजाद = खोज
मशहूर = प्रसिद्‌ध
मुँगरी = मुठियादार लाठी
बेशी = ज्यादा
अधिवासी = आकर बसने वाला

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

पाठ में आए हुए बाजों के नाम

(२) पाठ के आधार पर जानकारी लिखो :

१. मरिंबा
२. राजा

(३) लिखो :

बाजा, गाने को बना देता है

जापान के तारवाले बाजे

भाषा बिंदु

(अ) शब्द बनाओ :

------ ← उपसर्ग युक्त शब्द ← समान → प्रत्यय युक्त शब्द → ------

------ ← उपसर्ग युक्त शब्द ← सुर → प्रत्यय युक्त शब्द → ------

(आ) पाठों में आए सर्वनाम ढूँढ़कर उनका वाक्य में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

अनुवाद करो :
अपनी मातृभाषा के समाचार पत्र की दस पंक्तियों का हिंदी में अनुवाद करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा की संक्षिप्त जानकारी लिखो ।

I458I5

४. श्रद्‌धा और प्रयास

– काका कालेलकर

चि. प्यारी पुत्री शांति,

ता. २१-१२-६७ का पत्र मिला । इसमें भी अपना कोई विचार, अनुभव या निर्णय नहीं है । एक ही विषय का उल्लेख है । जो कुछ भी हम करें, समझ-बूझकर करें, यह नसीहत अच्छी है । पू. बापूजी भी कहते थे कि मनुष्य का जीवन कर्ममय तो होना चाहिए किंतु साथ-साथ विचार भी हो । बापूजी के जर्मन ज्यू दोस्त कैलनबैक बापूजी से कहते थे-'आपके हर एक काम के पीछे स्पष्ट विचार, चिंतन और सिद्‌धांत निष्ठा होती ही है । क्षण-क्षण ऐसी नित्य जागरूकता देखकर हम आश्चर्यचकित होते हैं ।'

दूसरा प्रमाण पत्र गांधीजी को पंडित मदनमोहन मालवीय जी की ओर से मिला था । वे बापूजी से कहते थे, 'कैसा आश्चर्य है कि हम अनेक लोग मिलकर, अनेक ढंग से चर्चा करने पर भी जब निर्णय नहीं कर सकते तब आपके पास आते हैं । आप सबको संतोष हो ऐसा निर्णय देते हैं अथवा रास्ता सुझाते हैं । यह तो ठीक लेकिन कितनी जल्दी, तुरंत निर्णय देते हैं । बड़ा कौतुक होता है ।' पू. बापूजी के मुँह से ही ये बातें सुनी थीं । पू. बापूजी सिद्‌धांतनिष्ठ तो थे और उनके सिद्‌धांत उनको अंध नहीं बनाते थे । सिद्‌धांतों का निर्णय और अर्थ वे तार्किक बुद्‌धि से करते नहीं थे । इसलिए मैं कहता था-गांधीजी कभी भी तर्कांध नहीं थे । तुम्हारे पत्र हमेशा प्रश्नार्थक ही होते हैं लेकिन तुम्हारे प्रश्न सुंदर ढंग से रखे जाते हैं । प्रश्न के आस-पास का वायुमंडल उपस्थित करके ही प्रश्न को सजीव किया जाता है । इसीलिए प्रश्न की चर्चा करने में आनंद आता है और विचार विस्तार से लिखने की इच्छा भी होती है ।

श्रद्‌धा, बुद्‌धि, समझ, अनुभव, कल्पना, अभ्युपगम आदि सब बातें अपनी-अपनी दृष्टि पेश करती हैं किंतु जब हम जीवनदृष्टि को प्रधानता देते हैं तब इन सभी का आप-ही-आप सामंजस्य हो जाता है । जीवन ही एक ऐसा सर्वमंगलकारी तत्त्व है, जिसमें सब शुभ दृष्टियों का अभयदान है । सामंजस्य और समन्वय ही जीवन का सच्चा व्याकरण है ।

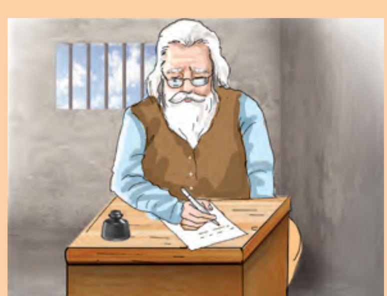

परिचय

जन्म : १८८५, सातारा (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १९८१ (नई दिल्ली)
परिचय : मराठी भाषी होकर काकासाहब ने हिंदी की भी सेवा की है । आपने देश-विदेश की अपनी यात्राओं के बड़े रोचक संस्मरण लिखे हैं । गांधी विचार के प्रचार-प्रसार का अनुपम कार्य आपने किया । १९६४ में भारत सरकार द्‌वारा आपको 'पद्‌मविभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'महात्मा गांधी का स्वदेशी धर्म', 'राष्ट्रीय शिक्षा का आदर्श' (हिंदी में), 'स्मरण यात्रा', 'लोकमाता' (मराठी में), 'हिमालयनो प्रवास', 'जीवनानों आनंद' (गुजराती में) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पत्र में काका कालेलकर जी ने महात्मा गांधीजी के विचार, चिंतन, सिद्‌धांतनिष्ठा आदि का वर्णन किया है । आपका मानना है कि श्रद्‌धा, बुद्‌धि, समझ, अनुभव, सत्यनिष्ठा आदि गुण ही जीवन को सफल बनाते हैं ।

मौलिक सृजन

श्रद्‌धा के साथ प्रयास से मंजिल तक पहुँचे हुए किसी व्यक्ति की जानकारी लिखो ।

श्रवणीय

अपने दादा जी से उनके जीवन के अनुभव सुनो और चर्चा करो ।

पठनीय

'बेटी घर का अभिमान' इस विषय से संबंधित लेख पुस्तकालय/समाचार पत्र/अंतरजाल से ढूँढ़कर पढ़ो ।

संभाषणीय

सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक बातें बताओ ।

लेखनीय

किसी कविता, कहानी के आशय को समझते हुए केंद्रीय भाव को मानक रूप में लिखो ।

उन्नत जीवन के लिए मनुष्य को बुद्‌धि के आगे जाना है इसमें शक नहीं लेकिन आगे जाने के लिए उसे पासपोर्ट तो बुद्‌धि से ही लेना चाहिए। बुद्‌धि ने जिस रास्ते को हीन, गलत और त्याज्य बताया, उस रास्ते को तो तुरंत छोड़ ही देना चाहिए । जब बुद्‌धि कहती है कि फलाने रास्ते जाने से लाभ है या हानि है मैं जानती ही नहीं क्योंकि मेरी पहुँच उस दिशा में, उस क्षेत्र में है नहीं । इसलिए मैं तुम्हें उस रास्ते को आजमाने की अनुमति देती हूँ, आशीर्वाद भी देती हूँ । मुझे वहाँ न ले चलो क्योंकि मेरी मदद, वहाँ न होगी । तब हम गूढ़ क्षेत्र में प्रवेश करते हैं । वहाँ श्रद्‌धा ही मदद कर सकती है । शायद बात सही होगी, शायद कुछ मिलेगा, प्रयत्न निष्फल नहीं होगा, ऐसे भाव से प्रवृत्त होना श्रद्‌धा का रास्ता है । जब श्रेष्ठ लोग कहते हैं और मेरा मन भी उस ओर झुकता है तब वह चीज जरूर सही होगी । ऐसा मानने की तरफ अनुकूल झुकाव, यही है सच्ची श्रद्‌धा का रास्ता ।

ज्ञान के कई क्षेत्र हैं, जिनमें श्रद्‌धा की मदद के बिना यात्रा का प्रारंभ ही नहीं हो सकता किंतु जो आदमी श्रद्‌धा को ले बैठता है और यात्रा का कष्ट नहीं करता उसे क्या मिलने वाला है ? श्रद्‌धा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होगा और केवल श्रद्‌धा से भी नहीं होगा । तो क्या चाहिए ? चाहिए ज्ञानप्राप्ति के लिए प्रयत्न, प्रयोग और कसौटी करने की तत्परता । ये प्रयोग तत्परता से, सत्यपरायणता से वही कर सकेगा जो निर्भय और प्राणवान है । इसके लिए संयतेंद्रिय होना जरूरी है । 'श्रद्‌धावान लभते ज्ञानम्‌ तत्परः संयतेंद्रियः ।' अब कहो तर्क, बुद्‌धि, समझ, श्रद्‌धा, कल्पना, अभ्युपगम इनमें कोई विरोध है ?

मनुष्य के अनुभव और साक्षात्कार भी एकांगी हो सकते हैं और वचन सत्य होते हुए भी सत्य को पूर्णरूप से व्यक्त करने में असमर्थ भी हो सकते हैं । इसीलिए धर्मग्रंथों का, ऋषि वचनों का और महावाक्यों का अर्थ समय-समय पर व्यापक होता आया है । अंतिम सत्य अर्थात परम सत्य समझने में भी क्रम विकास पाया जाता है । जहाँ अतिश्रद्‌धा है वहाँ गुरु के वचनों का व्यापक अर्थ करते भी शिष्य डरता है । कभी-कभी गुरु लोग शिष्यों की ओर से अतिश्रद्‌धा की ही अपेक्षा रखते हैं । ऐसे लोगों ने ही सिद्‌धांत चलाया है, श्रद्‌धा रखो तो बेड़ा पार है, उद्‌धार हो ही जाएगा । इसमें अलं बुद्‌धि आती है जो प्रगति के लिए मारक है । सत्यनिष्ठा, आत्मनिष्ठा और अनुभवमूलक जीवननिष्ठा यही मुख्य बात है ।

काका के सप्रेम शुभाशीष

शब्द वाटिका

लुत्फ = आनंद
अभ्युपगम = अंगीकार, पास जाना
समन्वय = ताल-मेल

मुहावरा
बेड़ा पार होना = उद्धार होना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) कृति पूर्ण करो :

जीवन दृष्टि की प्रधानता में इन बातों का सामंजस्य होता है ।

(२) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. किस रास्ते को तुरंत छोड़ देना चाहिए ?
२. बापूजी को अपनी जीवननिष्ठा से क्या प्राप्त हुआ ?

(३) लिखो :

१. जीवन का व्याकरण

२. ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक

(४) लेखक द्‌वारा बताई मुख्य बातें :

भाषा बिंदु

(अ) निम्न शब्दों का वर्ण विच्छेद करो :

जैसे - विधा = व्‌+इ+ध्‌+आ

विकास = ...	कारण = ...
कमजोरी = ...	कैसे = ...
कौआ = ...	जुगनू = ...

(आ) पाठ में आई दस क्रियाओं के प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखो ।

उपयोजित लेखन

'सब दिन होत न एक समान' का अनुभव कराने वाला कोई प्रसंग लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

प्राचीन काल से आज तक के प्रचलित संदेशवहन के साधनों की सचित्र सूची तैयार करो ।

I4E4JS

५. सुनो और गुनो

– *गोपालदास सक्सेना 'नीरज'*

परिचय

जन्म : १९२४, इटावा (उ.प्र.)
परिचय : गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी हिंदी साहित्यकार, शिक्षक, कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं । आपने मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति और सहज-सरल भाषा द्वारा हिंदी कविता को एक नया मोड़ दिया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'गीत-अगीत', 'नीरज की गीतिकाएँ', 'नीरज की पाती', 'विभावरी', 'कारवाँ गुजर गया,' 'तुम्हारे लिए', 'प्राणगीत' (कविता संग्रह) आदि ।

पद्‍य संबंधी

प्रस्तुत आधुनिक दोहों में कवि नीरज जी ने विविध मूल्यों की बात की है । इनमें आपने लोगों की भलाई करने, प्रेम से रहने, कृतज्ञ बनने, अभिमान को त्यागने आदि के लिए प्रेरित किया है ।

गो मैं हूँ मँझधार में आज बिना पतवार,
लेकिन कितनों को किया मैंने सागर पार ।

जब हो चारों ही तरफ घोर घना अँधियार,
ऐसे में खद्‍योत भी पाते हैं सत्कार ।

टी. वी. ने हमपर किया यूँ छुप-छुपकर वार,
संस्कृति सब घायल हुई बिना तीर-तलवार ।

दूरभाष का देश में जब से हुआ प्रचार,
तब से घर आते नहीं चिट्‌ठी-पत्री-तार ।

ज्ञानी हो फिर भी न कर दुर्जन संग निवास,
सर्प-सर्प है, भले ही मणि हो उसके पास ।

भक्तों में कोई नहीं बड़ा सूर से नाम,
उसने आँखों के बिना देख लिए घनश्याम ।

तोड़ो, मसलो या कि तुम उसपर डालो धूल,
बदले में लेकिन तुम्हें खुशबू ही दे फूल ।

पूजा के सम पूज्य है जो भी हो व्यवसाय,
उसमें ऐसे रमो ज्यों जल में दूध समाय ।

हम कितना जीवित रहे इसका नहीं महत्त्व,
हम कैसे जीवित रहे यही तत्त्व अमरत्व ।

जीने को हमको मिले यद्‍यपि दिन दो-चार,
जिएँ मगर हम इस तरह हर दिन बनें हजार ।

अहंकार और प्रेम का, कभी न निभता साथ,
जैसे संग रहते नहीं संध्या और प्रभात ।

मात्र वंदना में नहीं फूल चढ़े दो-चार,
उसके चरणों में सदा चढ़ते शीश अपार ।

दिए तुझे माँगे बिना जिसने फल और छाँह,
काट रहा है मूढ़ तू, उसी वृक्ष की बाँह ।

—०—

शब्द वाटिका

मँझधार = नदी की धारा के बीच
पतवार = नाव को आगे-पीछे चलाने का साधन, चप्पू
खद्‌योत = जुगनू
प्रभात = सुबह
शीश = सिर
छाँह = छाया

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) परिणाम लिखो :

१. दूरदर्शन के आने का ------------
२. दूरभाष के प्रचार का ------------

(२) प्रस्तुत कविता में से अपनी पसंद के किन्हीं दो दोहों से मिलने वाली सीख लिखो ।

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. सर्प	---------	छाँह
२. घनश्याम	---------	मणि
३. फूल	---------	सूरदास
४. वृक्ष	---------	खुशबू

(४)

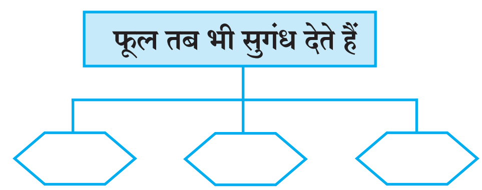

कल्पना पल्लवन

'चरित्र निर्माण में सत्संगति आवश्यक होती है' इसपर अपने विचार लिखो ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित विरामचिह्नों का प्रयोग करके कोई संवाद लिखो :

;   ,   ।   ?   !   '........'   ''.........''

उपयोजित लेखन

अपने विद्‌यालय में मनाए गए 'बाल दिवस' समारोह का वृत्तांत लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

मनुष्य के लिए वृक्षों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की सूची बनाओ ।

I4HZLF

६. और प्रेमचंद जी चले गए

– डॉ. रामकुमार वर्मा

बचपन से ही रेलवे स्टेशन पर जाना मुझे अच्छा लगता है । बात सन १९३५ की है । मैं शाम के समय टहलने के लिए प्रयाग स्टेशन पर चला गया । तभी मैंने देखा कि तीसरे दर्जे के डिब्बे से एक सज्जन उतर रहे हैं और अपना बिस्तर स्वयं अपनी बगल में दबाए प्लेटफार्म पर आगे बढ़ रहे हैं । पास आने पर देखा कि वृद्‌ध सज्जन और कोई नहीं, हिंदी के प्रसिद्‌ध कहानी और उपन्यास लेखक प्रेमचंद जी हैं । मैं आगे बढ़कर बोल उठा; ''बाबू जी ! आप ?'' उन्होंने जोर से ठहाका लगाया और कहा, ''हाँ, मैं ।'' उनके अट्‌टहास से सारा स्टेशन गूँज उठा । मैंने पूछा– ''कहाँ जाइएगा ?'' उत्तर दिया–''जहाँ तुम कहो ।'' मैंने कहा–''मेरे घर चलिए ।'' उन्होंने उत्तर दिया–''चलो'' और बिना किसी तकल्लुफ के वे मेरे साथ पैदल मेरे घर चले आए । इतने बड़े साहित्यकार, वे इतने सरल और सौम्य हैं कि अपने जीवन की सुविधा के लिए कोई भी उपकरण जुटाना नहीं चाहते । उनका अट्‌टहास इतना आकाशव्यापी है कि वातावरण का सारा विषाद उसमें धुल जाता है ।

वे हिंदुस्तानी एकेडेमी के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिए प्रयाग आए हुए थे । ग्यारह बजे दिन से तीन बजे तक वे उसमें सम्मिलित होते थे किंतु प्रातःकाल से ही उनसे भेंट करने वालों का क्रम आरंभ हो जाता था जो ग्यारह बजे रात तक चलता रहता था । जब वे बोलने के लिए खड़े होते तो पहले वे एक कहकहा लगाते जिससे श्रोतागण उन्हें सुनने के लिए और भी उत्सुक हो उठते थे । फिर कहते–''आपसे कहूँ भी तो क्या कहूँ और कहूँ तो यह कहूँ कि आप आँखों से काम लीजिए, कानों से नहीं । आप मुझे देखिए और पढ़िए–सुनिए मत । सुनना गलत है, देखना सही है । मेरी जिंदगी तो सपाट मैदान है । उसमें कितने खंदक हैं, गड्‌ढे हैं, कितने काँटे, कितनी झाड़ियाँ हैं, आप सोच भी नहीं सकते । लेकिन उसी पर चलकर आप लोगों के पास आया हूँ । पिता ने मेरा नाम धनपत राय रखा लेकिन धन से कभी वास्ता नहीं रहा । पढ़ते समय एक वकील साहब के लड़कों को पढ़ाता था, पाँच रुपये मासिक मिल जाता था । दो–रुपयों में अपना गुजारा करता था, तीन रुपये घर भेज देता था । उसी समय मैंने 'तिलिस्म होशरुबा' और 'फिसाना आजाद' पढ़ा था । कुछ होश आया तो उर्दू में लिखना शुरू किया फिर आप लोगों ने हिंदी में बुला लिया ।''

जब तक प्रेमचंद जी मेरे घर रहे, मुझे मुश्किल से घंटे–आध–घंटे

परिचय

जन्म : १९०५, सागर (म.प्र.)
मृत्यु : १९९०
परिचय : रामकुमार वर्मा जी आधुनिक हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्‌ध कवि, एकांकीकार, नाटककार, लेखक और आलोचक हैं । आपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर डेढ़ सौ से भी अधिक एकांकी लिखे हैं। आपने समीक्षक तथा हिंदी साहित्य के इतिहास लेखक के रूप में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'चित्ररेखा', 'जौहर', 'अभिशाप', 'वीर हमीर' (काव्य संग्रह), 'चार ऐतिहासिक एकांकी', 'रेशमी टाई', 'शिवाजी', (एकांकी) हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, 'साहित्य समालोचना' (आलोचना) 'एकलव्य', 'उत्तरायण', 'ओ अहिल्या' (नाटक) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संस्मरण में डॉ. रामकुमार वर्मा जी ने प्रसिद्‌ध उपन्यासकार एवं कथाकार प्रेमचंद के व्यक्तित्व पर रोशनी डाली है । इस संस्मरण में प्रेमचंद जी की सरलता, सादगी भोलेपन के दर्शन होते हैं ।

का समय मिलता, जब मैं उनके साथ चाय पीता था अन्यथा उनका समय अन्य व्यक्ति अधिकतर उनकी अनिच्छा से अपने अधिकार में कर लेते । एक दिन मैं अपनी कविताओं का क्रम व्यवस्थित कर उनकी प्रेस कॉपी तैयार कर रहा था । वे आए । पूछा–''क्या कर रहे हो ?'' मैंने कहा–मैं अपनी कविताओं का संग्रह प्रकाशित कराने के लिए ठीक कर रहा हूँ । उन्होंने कहा–''छपने के लिए कहाँ भेज रहे हो ?'' मैंने कहा–''साहित्य भवन, प्रयाग ही इसे प्रकाशित करने का आग्रह कर रहा है।'' उन्होंने कहा–''गलत। इसे मैं प्रकाशित करूँगा ।'' ऐसा कहकर उन्होंने मेरा काव्य संग्रह अपने बैग में रख लिया ।

वह संग्रह 'रूपराशि' के नाम से उनके सरस्वती प्रेस बनारस से प्रकाशित हुआ । जिस दिन वे जाने वाले थे, उस दिन मेरी पत्नी ने उनके लिए खीर तैयार की । किंतु रात ग्यारह बजे तक प्रतीक्षा करने पर भी उनके दर्शन नहीं हुए । लाचार होकर पत्नी ने उनके कमरे में भोजन की थाली रख दी और उसमें खीर का कटोरा भी सँभालकर रख दिया । सोचा–'जब प्रेमचंद जी आएँगे, भोजन करेंगे ।' सुबह उठकर देखा कि प्रेमचंद जी अपना सामान लेकर चले गए हैं । टेबल पर एक परचा लिखकर छोड़ दिया है। वह परचा इस प्रकार था:–

'प्यारे रामकुमार !

निहायत अफसोस है कि मैं दिन भर से गायब रहा। मेरे वक्त पर न आने से तुम्हें और बहूरानी को बेहद तकलीफ हुई होगी। लाचार था। रात दो बजे लौटकर आया, तुम लोग सो गए थे । जगाना ठीक नहीं समझा। देखा, कमरे में बहूरानी ने खाने की थाली परोसकर रख दी है। बढ़िया खीर भी थी लेकिन इलाहाबाद की गरमी में सुबह की बनी हुई खीर का दूध फट गया था । एक जगह खाना खा चुका था लेकिन खीर तो मैंने खा ही ली। इस डर से कि फटे हुए दूध की खीर छोड़ देने से कहीं बहूरानी का दिल मेरी ओर से फट न जाए। खैर, उनको बहुत–बहुत आशीर्वाद । वे खुश रहें । फौरन जा रहा हूँ। चार बजे की गाड़ी पकड़नी है । भई, बुरा मत मानना । बगैर मिले जा रहा हूँ ।

तुम्हारा,

धनपत राय

और इस तरह विश्वविख्यात कहानीकार और उपन्यासकार प्रेमचंद जी उस रात मेरे घर से चले गए ।

मौलिक सृजन

अपने अनुभव किए हुए आतिथ्य के बारे में लिखो ।

श्रवणीय

महात्मा गांधीजी का कोई संस्मरण सुनो और अपने मित्रों को सुनाओ ।

संभाषणीय

'सुदर्शन' लिखित 'हार की जीत' कहानी पर वार्तालाप करो ।

लेखनीय

नदी और तालाब के बीच का संवाद सृजनात्मक ढंग से लिखो ।

पठनीय

प्रेमचंद जी लिखित 'बड़े भाई साहब' कहानी पढ़ो, उस कहानी का केंद्रीय विचार बताओ ।

शब्द वाटिका

तकल्लुफ = शिष्टाचार, औपचारिकता
अट्टहास = जोर की हँसी, ठहाका
प्रतीक्षा = इंतजार
निहायत = बहुत

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

प्रेमचंद जी की विशेषताएँ
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) कारण लिखो :

१. प्रेमचंद जी प्रयाग आए थे -------
२. लेखक कविताओं की प्रेस कॉपी बना रहे थे -------
३. प्रेमचंद जी ने लेखक की पत्नी द्वारा परोसी खीर खाई थी -------

(३) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. सुबह उठकर लेखक ने क्या देखा ?
२. लेखक का काव्य संग्रह किस नाम से प्रकाशित हुआ ?

भाषा बिंदु पाठ के किन्हीं दस वाक्यों के उद्देश्य और विधेय अलग करके लिखो ।

उपयोजित लेखन **मुद्दों के आधार पर कहानी लिखो :**

एक जंगल में विशाल घना वृक्ष → उसपर पक्षियों के घोंसले → विषैले बाण, पेड़ के तने में घुसने से पेड़ का सूख जाना

सारे पक्षियों का इधर-उधर उड़ जाना → एक तोते का उसी पेड़ पर बैठे रहना → दूसरे तोते का उड़ चलने का आग्रह करना → इनकार

कहना 'मेरी दो पीढ़ियों का इसी पेड़ पर निवास' → 'इसे छोड़कर जाना असंभव' → शीर्षक

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन यातायात के नियमों, सांकेतिक चिह्नों एवं हेल्मेट की आवश्यकता आदि के चार्ट बनाकर विद्यालय की दीवार सुशोभित करो ।

I4HVN3

७. हींगवाला

– सुभद्राकुमारी चौहान

लगभग पैंतीस साल का एक खान आँगन में आकर रुक गया । हमेशा की तरह उसकी आवाज सुनाई दी – ''अम्मा... हींग लोगी?''

पीठ पर बँधे हुए पीपे को खोलकर उसने नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया । भीतर बरामदे से नौ–दस वर्ष के एक बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया – ''अभी कुछ नहीं लेना है, जाओ !''

पर खान भला क्यों जाने लगा ? जरा आराम से बैठ गया और अपने साफे के छोर से हवा करता हुआ बोला– ''अम्मा, हींग ले लो, अम्मा ! हम अपने देश जाता है, बहुत दिनों में लौटेगा ।'' सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली – ''हींग तो बहुत–सी ले रखी है खान ! अभी पंद्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही तो ली थी ।''

वह उसी स्वर में फिर बोला– ''हेरा हींग है माँ, हमको तुम्हारे हाथ की बोहनी लगती है । एक ही तोला ले लो, पर लो जरूर ।'' इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा– ''तुम और कुछ मत देखो माँ, यह हींग एक नंबर है, हम तुम्हें धोखा नहीं देगा ।''

सावित्री बोली– ''पर हींग लेकर करूँगी क्या ? ढेर–सी तो रखी है ।'' खान ने कहा–''कुछ भी ले लो अम्मा ! हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी । हम अपने देश कू जाता है । खुदा जाने, कब लौटेगा ?'' और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तौलने लगा। इसपर सावित्री के बच्चे नाराज हुए । सभी बोल उठे–''मत लेना माँ, तुम कभी न लेना । जबरदस्ती तौले जा रहा है ।'' सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न देकर, हींग की पुड़िया ले ली । पूछा–''कितने पैसे हुए खान ?''

''इक्कीस रुपये अम्मा!'' खान ने उत्तर दिया । सावित्री ने तीन रुपये तोले के भाव से सात तोले का दाम, इक्कीस रुपये लाकर खान को दे दिए। खान सलाम करके चला गया पर बच्चों को माँ की यह बात अच्छी न लगी ।

बड़े लड़के ने कहा–''हींग की कुछ जरूरत नहीं थी ।'' छोटा माँ से चिढ़कर बोला–''दो माँ, दो रुपये हमको भी दो । हम बिना लिए न रहेंगे ।'' लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर में

परिचय

जन्म : १९०४, इलाहाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : १९४८, जबलपुर (म.प्र.)
परिचय : सुभद्राकुमारी चौहान जी सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका हैं। राष्ट्रीय चेतना, नारी विमर्श, शैशव काल की स्मृतियाँ आपकी कविताओं के केंद्र बिंदु हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'बिखरे मोती', 'उन्मदिनी', 'सीधे–साधे चित्र' (कहानी संग्रह), 'मुकुल', 'त्रिधारा', 'जलियाँवाले बाग में बसंत', 'झाँसी की रानी', 'यह कदंब का पेड़ अगर .....' (काव्य संग्रह) आदि ।

गद्‍य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने धर्म–जाति के बंधनों से ऊपर उठकर सहज और सरल मन को महत्त्व प्रदान किया है । कोई भी धर्म गलत शिक्षा नहीं देता । गिने–चुने लोगों के कारण ही समाज में अशांति फैलती है । यहाँ सर्वधर्मसमभाव जताया गया है ।

मौलिक सृजन

'भारत सर्वधर्मसमभाव को महत्त्व देने वाला महान देश है', स्पष्ट करो ।

बोली–''तुम माँ से पैसा न माँगो । वह तुम्हें न देंगी । उनका बेटा तो वही खान है ।'' सावित्री को बच्चों की बातों पर हँसी आ रही थी । उसने अपनी हँसी दबाकर बनावटी क्रोध से कहा– ''चलो–चलो, बड़ी बातें बनाने लग गए हो । खाना तैयार है, खाओ ।''

कई महीने बीत गए । सावित्री की सब हींग खत्म हो गई । इस बीच होली आई । होली के अवसर पर शहर में खासी मारपीट हो गई थी। सावित्री कभी– कभी सोचती, हींगवाला खान तो नहीं मार डाला गया ? न जाने क्यों, उस हींगवाले खान की याद उसे प्राय: आ जाया करती थी ।

एक दिन सवेरे–सवेरे सावित्री उसी मौलसिरी के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी कुछ बुन रही थी । उसने सुना, उसके पति किसी से कड़े स्वर में कह रहे हैं– ''क्या काम है ? भीतर मत जाओ । यहाँ आओ ।'' उत्तर मिला– ''हींग है, हेरा हींग'' और खान तब तक आँगन में सावित्री के सामने पहुँच चुका था । खान को देखते ही सावित्री ने कहा– ''बहुत दिनों में आए खान ! हींग तो कब की खत्म हो गई ।''

खान बोला– ''अपने देश गया था अम्मा, परसों ही तो लौटा हूँ ।'' सावित्री ने कहा– ''यहाँ तो बहुत जोरों का दंगा हो गया है ।'' खान बोला–''सुना, समझ नहीं है लड़ने वालों में ।''

सावित्री बोली–''खान, हमारे घर चले आए तुम्हें डर नहीं लगा ?''

दोनों कानों पर हाथ रखते हुए खान बोला–''ऐसी बात मत करो अम्मा । बेटे को भी क्या माँ से डर हुआ है, जो मुझे होता ?'' और इसके बाद ही उसने अपना डिब्बा खोला और एक छटाँक हींग तौलकर सावित्री को दे दी । रेजगारी दोनों में से किसी के पास नहीं थी । खान ने कहा कि वह पैसा फिर आकर ले जाएगा । सावित्री को सलाम करके वह चला गया ।

इस बार लोग दशहरा दूने उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे । चार बजे शाम को माँ काली का जुलूस निकलने वाला था । पुलिस का काफी प्रबंध था । सावित्री के बच्चों ने कहा– ''हम भी काली माँ का जुलूस देखने जाएँगे ।''

सावित्री के पति शहर से बाहर गए थे । उसने बच्चों को न जाने

संभाषणीय

किसी सुनी हुई कहानी, प्रसंग आदि की भावी घटनाओं का अनुमान लगाकर चर्चा करो ।

श्रवणीय

किसी समारोह में सुने हुए भाषण के प्रमुख मुद्दों को पुनः प्रस्तुत करने हेतु परिवार के सदस्यों को सुनाओ ।

कितने प्रलोभन दिए पर बच्चे न माने, सो न माने । नौकर रामू भी जुलूस देखने को बहुत उत्सुक हो रहा था । उसने कहा- ''भेज दो न माँ जी, मैं अभी दिखाकर लिए आता हूँ ।'' लाचार होकर सावित्री को जुलूस देखने के लिए बच्चों को बाहर भेजना पड़ा । उसने बार-बार रामू को ताकीद की कि दिन रहते ही वह बच्चों को लेकर लौट आए ।

बच्चों को भेजने के साथ ही सावित्री लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। देखते-ही-देखते दिन ढल चला । अँधेरा भी बढ़ने लगा पर बच्चे न लौटे । अब सावित्री को न भीतर चैन था, न बाहर । सावित्री की स्थिति मानो ऐसी हो गई थी जैसे-अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत । इतने में उसे कुछ आदमी सड़क पर भागते हुए जान पड़े। वह दौड़कर बाहर आई, पूछा-''ऐसे भागे क्यों जा रहे हो ? जुलूस तो निकल गया न ।''

एक आदमी बोला-''दंगा हो गया जी, बड़ा भारी दंगा !'' सावित्री के हाथ-पैर ठंडे पड़ गए । तभी कुछ लोग तेजी से आते हुए दिखे । सावित्री ने उन्हें भी रोका । उन्होंने भी कहा-''दंगा हो गया है !''

अब सावित्री क्या करे ? उन्हीं में से एक से कहा-''भाई, तुम मेरे बच्चों की खबर ला दो । दो लड़के हैं, एक लड़की । मैं तुम्हें मुँहमाँगा इनाम दूँगी ।'' एक देहाती ने जवाब दिया-''क्या हम तुम्हारे बच्चों को पहचानते हैं माँ जी ?'' यह कहकर वह चला गया ।

सावित्री सोचने लगी, सच तो है, इतनी भीड़ में भला कोई मेरे बच्चों को खोजे भी कैसे? पर अब वह भी करे, तो क्या करे? उसे रह-रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था । आखिर उसने बच्चों को भेजा ही क्यों ? वे तो बच्चे ठहरे, जिद तो करते ही पर भेजना उसके हाथ की बात थी । सावित्री पागल-सी हो गई । मानो उसके प्राण मुरझा गए। बच्चों की मंगल कामना के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले । शोरगुल बढ़कर शांत हो गया । रात के साथ-साथ नीरवता बढ़ चली पर उसके बच्चे लौटकर न आए । सावित्री हताश हो गई और फूट-फूटकर रोने लगी । उसी समय उसे वही चिरपरिचित स्वर सुनाई पड़ा- ''अम्मा !''

सावित्री दौड़कर बाहर आई उसने देखा, उसके तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं । खान ने सावित्री को देखते ही कहा, ''वक्त अच्छा नहीं है अम्मा ! बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजा करो ।'' बच्चे दौड़कर माँ से लिपट गए और उन्होंने एक साथ कहा, ''खान बहुत अच्छा है माँ ! उसने हमें बचाया ।''

——०——

पठनीय

किसी लोक संस्कृति के बारे में यू-ट्यूब पर जानकारी पढ़ो और अपने मित्रों को बताओ ।

लेखनीय

किसी प्राकृतिक चित्र का वर्णन दस-बारह वाक्यों में लिखो ।

शब्द वाटिका

साफा = एक तरह की पगड़ी
बोहनी = पहली बिक्री
फूट-फूटकर रोना = बहुत रोना
प्राण मुरझा जाना = व्याकुल होना, बुरी तरह डर जाना

मुहावरे/कहावत

हाथ-पैर ठंडे पड़ना = बहुत डर जाना
अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत = समय बीत जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं होता

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

सावित्री के परिवार के सदस्य

(२) जानकारी लिखो :

१. हींगवाला   २. सावित्री के बच्चे

(३) उत्तर लिखो :

१. हींगवाला सावित्री को हींग लेने का आग्रह क्यों कर रहा था ?
२. दंगे की खबर सुनकर सावित्री पर हुआ परिणाम लिखो ।

(४) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. सावित्री कहाँ बैठी थी ?
२. शहर में किसका जुलूस निकलने वाला था ?
३. सावित्री के बच्चे किसके साथ सकुशल लौट आए ?
४. खान ने सावित्री को देखते ही क्या कहा?

भाषा बिंदु

(अ) निम्न शब्दों से कृदंत/तद्धित बनाओ :

रोकना, हँसना, डरना, बचाना, लाचार, बच्चा, दिन, कुशल

(आ) तालिका में निर्देशित कालानुसार क्रियारूप में परिवर्तन करके लिखो :

क्रिया	सामान्य वर्तमान काल	अपूर्ण वर्तमान काल	पूर्ण वर्तमान काल	सामान्य भूतकाल	अपूर्ण भूतकाल	पूर्ण भूतकाल	सामान्य भविष्यकाल	अपूर्ण भविष्यकाल	पूर्ण भविष्यकाल
लिखना ।	लिखती है ।	लिख रहा है ।	लिखा है ।	लिखा ।	लिख रहा था ।	लिखा था ।	लिखेगा ।	लिख रहा होगा ।	लिखा होगा ।

(कर्ता के अनुसार क्रिया रूप में परिवर्तन करना अपेक्षित है ।)

सोना, करना, माँगना, देना, उठना, क्रियारूपों को इसी प्रकार सूची में लिखो ।

उपयोजित लेखन

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को चार दिन की छुट्टी की माँग करने हेतु प्रार्थना पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

किसी सार्वजनिक, सामाजिक समारोह की निमंत्रण पत्रिका तैयार करो ।

I56RPQ

८. कदम मिलाकर चलना होगा

– *अटलबिहारी वाजपेयी*

बाधाएँ आती हैं आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पाँवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों से, हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा ।
कदम मिलाकर चलना होगा ।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्‌यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा !
कदम मिलाकर चलना होगा ।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा ।
कदम मिलाकर चलना होगा ।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अब ?
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल, समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न माँगते,
पावस बनकर ढलना होगा ।
कदम मिलाकर चलना होगा ।

——०——

परिचय

जन्म : १९२४, ग्वालियर (म.प्र.)
परिचय : भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी जी कवि, पत्रकार एवं प्रखर वक्ता हैं । आपकी रचनाएँ जिजीविषा, राष्ट्रप्रेम, एकता एवं ओज से परिपूर्ण हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मेरी इक्यावन कविताएँ' (कविता संग्रह), 'कुछ लेख : कुछ भाषण', 'बिंदु-बिंदु विचार', 'अमर बलिदान' (गद्‌य रचनाएँ) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत नवगीत में वाजपेयी जी का कहना है कि जीवन में चाहे सुख हों या दुख, परिस्थितियाँ अनुकूल हों या प्रतिकूल, हमें सदैव कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना चाहिए ।

शब्द वाटिका

रुदन = विलाप, रुलाई

उन्नत = ऊँचा, श्रेष्ठ

कल = पार्श्व, बगल

कछार = नदी के किनारे की जमीन

क्षणिक = क्षण भर रहने वाला

अरमान = इच्छा, आकांक्षा

हर्षित = प्रसन्न

श्लथ = थका हुआ, श्रांत

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखो :

१. अरमानों को दलना होगा । → ....

२. पीड़ाओं में पलना होगा । → ....

I5FMRD

(२) आकृति में दिए शब्दों की उचित जोड़ियाँ मिलाओ और तालिका में लिखो :

प्रलय, असंख्यक, उन्नत, क्षणिक, बलिदान, मस्तक, घोर घटा, जीत

	अ	आ
१.	-------------	-------------
२.	-------------	-------------
३.	-------------	-------------
४.	-------------	-------------

(३) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. आग की ज्वालाएँ कहाँ बरसेंगी ?

२. क्या बनकर ढलना होगा ?

भाषा बिंदु

(अ) पद्‌य पाठों में आई विरुद्‌धार्थी शब्द जोड़ियों की सूची बनाओ :

__________ × __________

__________ × __________

__________ × __________

__________ × __________

(आ) पाठ में प्रयुक्त अव्ययों को ढूँढ़कर उनके भेद लिखो ।

कल्पना पल्लवन

‘पीड़ाओं में पलना होगा’ इस पंक्ति से संबंधित अपने विचार लिखो ।

उपयोजित लेखन

शब्दों के आधार पर कहानी लिखो :

रोशनी, पलंग, पत्र, पहाड़ी

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

‘रेड क्रॉस सोसायटी’ के बारे में अंतरजाल से जानकारी पढ़कर लिखो ।

१. पंपासर

– *नरेश मेहता*

शाल और सागौन वनों को, पार किया शबरी ने,
सुन रक्खा था नाम कभी, पंपासर का शबरी ने ।

पंपासर में बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के हैं आश्रम
ज्ञान-व्यान, तप-आराधन के तीर्थरूप हैं आश्रम ।

प्रातःकाल हुआ ही था, सब स्नान-ध्यान में रत थे,
यज्ञ आदि के लिए बटुक जन लकड़ी बीन रहे थे ।

कोई क्यारी छाँट रहा था, सींच रहा जल कोई,
दुही जा चुकी थीं गायें सब, रँभा रही थीं कोई ।

गीले आँगन में हरिणों के, खुर उभरे पड़ते थे,
बैठ आम की डाली पर, तोते चीखे पड़ते थे ।

जलकलशी ले ऋषिकन्याएँ, पोखर आतीं-जातीं,
भीगी, एकवसन में वे सब, धुले चरण घर चलतीं ।

यज्ञ वेदियाँ सुलग चुकी थीं, वेदपाठ था जारी,
कितनी दिव्य और भव्य थी, शांति यहाँ की सारी ।

थी विशाल कितनी हरीतिमा, शोभित थीं पगवाटें,
था विराट वट वृक्ष खड़ा, फैलाए वृद्ध जटाएँ ।

दूर किसी एकांत विजन में, मुग्ध मयूरी तन्मय,
देख रही अपने प्रिय का रास नृत्य जो रसमय ।

हरसिंगार, चंपा, कनेर, कदली, केला थे फूले,
कमलों पर टूटे पड़ते थे भ्रमर सभी रस भूले ।

——०——

परिचय

जन्म : १९२२, शाजापुर (म.प्र.)
मृत्यु : २०००
परिचय : 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता नरेश मेहता जी उन शीर्षस्थ रचनाकारों में से हैं । जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं । आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है, जिसमें विषयानुकूल भावपूर्ण प्रवाह है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'कितना अकेला आकाश' (यात्रा संस्मरण), 'चैत्या', 'अरण्या', 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'उत्सवा', 'वनपाखी सुनो' 'प्रवाद पर्व' (कविता संग्रह), 'उत्तर कथा' (२ भागों में), 'डूबते मस्तूल', 'दो एकांत' (उपन्यास), 'शबरी', 'संशय की एक रात', (खंडकाव्य) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश 'शबरी' खंडकाव्य से लिया गया है । यहाँ पर कवि नरेश मेहता जी ने पंपा सरोवर के पास मुनियों के आश्रम, बटुक जन के क्रिया-कलाप, वहाँ के पशु-पक्षी, प्रकृति सौंदर्य आदि का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है ।

शब्द वाटिका

बटुक जन = छोटे-छोटे बच्चे

शाल = एक प्रकार का वृक्ष

रँभाना =गाय का आवाज करना

हरीतिमा = हरियाली, हरापन

मुहावरा

टूट पड़ना = भिड़ जाना, हमला करना

❊ **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) उत्तर लिखो :

पद्‌य में प्रयुक्त वृक्ष

पद्‌य में प्रयुक्त पुष्प

(२) एक शब्द में उत्तर लिखो :

१. पंपा सरोवर का नाम जिसने सुना है ....

२. जलकलशी ले जाने वाली ....

(३) प्रस्तुत कविता की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखो ।

I5PIT1

कल्पना पल्लवन 'वृक्ष महान दाता हैं', स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु **गद्‌यपाठों में आई संज्ञाएँ तथा विशेषण ढूँढ़कर निम्न आकृतियों में भेदों सहित लिखो :**

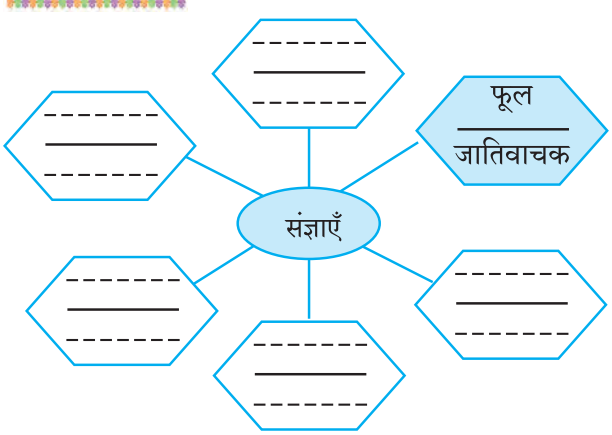

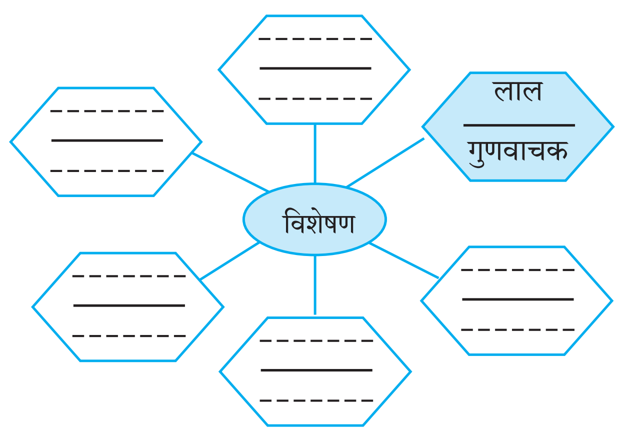

उपयोजित लेखन 'तालाब की आत्मकथा' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन भारत की झीलों की विशेषताएँ लिखो ।

२. परोपकार

– श्रीकृष्ण

बहुत पहले की बात है । एक गाँव में फूलों की क्यारियाँ चारों तरफ सुंगध फैला रही थीं । फूलों से मधु इकट्‌ठा करने के लिए मधुमक्खियाँ फूलों पर मँड़रा रही थीं । एक मधुमक्खी गुलाब के फूल पर बैठी उसका रस चूस रही थी । तभी एक बर्र उड़ती हुई वहाँ आ पहुँची । बर्र को अपने रूप-रंग पर बड़ा घमंड था । वह मधुमक्खी को देखकर जल-भुन गई । बर्र ने मधुमक्खी से कहा, ''हम दोनों में बहुत समानता है । हम दोनों के पंख हैं हम दोनों उड़ सकती हैं । हम दोनों फूलों का रस चूसती हैं । हम दोनों डंक भी मारती हैं । फिर क्या कारण है कि मनुष्य तुमको पालते और मुझे दूर भगाते हैं । वैसे मैं तुमसे अधिक सुंदर भी हूँ ।'' मुझे बताओ कि मनुष्य मेरे साथ ऐसा क्यों करते हैं ?

मधुमक्खी ने उत्तर दिया, ''यह सच है बहन ! तुम रंग-बिरंगी हो, उड़ती भी हो परंतु फिर भी तुम्हारा आदर नहीं होता, इसका कारण यह है कि कोई भी प्राणी सुंदरता के कारण नहीं, अपने अच्छे गुणों के कारण आदर पाता है । मनुष्य उन प्राणियों का ही आदर करते हैं जो परोपकारी होते हैं, दूसरों को दुख नहीं पहुँचाते हैं । तुम सुंदर हो, परंतु मनुष्य को केवल कष्ट देती हो । तुम उन्हें डंक मारती हो । तुम्हारे डंक मारने से सूजन आ जाती है । बहुत दर्द होता है । मैं उन्हें मीठा शहद देती हूँ । मैं उनके काम आती हूँ । यही कारण है कि वे मुझे पालते हैं और तुम्हें दूर भगाते हैं ।''

— ० —

परिचय

परिचय : श्रीकृष्ण जी अपनी कहानियों एवं लघुकथाओं के लिए प्रसिद्ध हैं । आपकी कहानियाँ एवं अन्य रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सतत छपती रहती हैं । आपकी रचनाओं में जीवनमूल्यों की प्रधानता पाई जाती है ।

गद्‌य संबंधी

यहाँ दी गई लघुकथा में लेखक श्रीकृष्ण जी का कहना है कि व्यक्ति को प्रेम एवं आदर, शारीरिक सुंदरता के कारण नहीं बल्कि उसके सद्‌गुणों के कारण प्राप्त होता है ।

मौलिक सृजन

'किसी भी लघुकथा से जीवन-बोध प्राप्त होता है' इसपर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

डंक = मधुमक्खी का जहरीला काँटा, दंश **बर्र** = ततैया नाम का उड़ने वाला कीड़ा

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) विशेषताएँ लिखो :

बर्र → ______ , ______

मधुमक्खी → ______ , ______

(२) कारण लिखो :

१. मनुष्य द्वारा प्राणी का आदर पाना -

२. मनुष्य द्वारा प्राणी का अनादर पाना -

(३) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. अपने रूप-रंग पर किसे घमंड था ?

२. लोग मधुमक्खी को क्यों पालते हैं ?

(४) इस लघुकथा से प्राप्त होने वाली सीख लिखो ।

भाषा बिंदु **निम्नलिखित अव्ययों के भेद पहचानकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो :**

	अव्यय शब्द	भेद	वाक्य
१.	ओर	---------	------------------------------------
२.	वाह !	---------	------------------------------------
३.	धीरे-धीरे	---------	------------------------------------
४.	लेकिन	---------	------------------------------------
५.	तरफ	---------	------------------------------------
६.	अरेरे !	---------	------------------------------------
७.	तेज	---------	------------------------------------
८.	परंतु	---------	------------------------------------

उपयोजित लेखन प्राकृतिक सौंदर्य वाले किसी चित्र का वर्णन दस-बारह पंक्तियों में लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन हिंदी साप्ताहिक पत्रिका/समाचार पत्रों से प्रेरक कथाओं का संकलन करो ।

I5YEUN

३. आत्मनिर्भरता

– आचार्य रामचंद्र शुक्ल

यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है । युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कई गुना बढ़ी हुई हैं । उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने से बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबरवालों से कोमलता का व्यवहार करे । ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं ।

अब तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दूसरा कोई नहीं दे सकता । कैसा भी विश्वासपात्र मित्र हो, तुम्हारे किसी काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता । हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा । हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतंत्रता को दृढ़तापूर्वक बनाए रखना चाहिए । जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर नहीं होगा । नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे पर इस बात को न देखेंगे कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है । अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो । अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो । जितना ही जो मनुष्य अपना लक्ष्य ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है ।

संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़चित्त मनुष्य हो गए हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया । राजा हरिश्चंद्र पर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आईं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा । उनकी प्रतिज्ञा यही रही –

'चाँद टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार ।
पै दृढ़ श्रीहरिश्चंद्र को, टरै न सत्य विचार ।।'

महाराणा प्रताप जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी पत्नी और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे परंतु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा की चिंता जितनी अपने को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं ।

परिचय

जन्म : १८८४, बस्ती (उ.प्र.)
मृत्यु : १९४१, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य में वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात किया । आप मौलिक और श्रेष्ठ निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं । व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण निर्दोष भाषा आपकी विशेषता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'विचार वीथी', 'चिंतामणि' भाग-१,२,३ (निबंध संग्रह), 'रसमीमांसा', 'त्रिवेणी', 'सूरदास' (आलोचना), 'जायसी ग्रंथावली', 'तुलसी ग्रंथावली' (संपादन) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत निबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने विनम्रता, आत्मनिर्भरता, बड़ों का सम्मान, छोटों को स्नेह देने जैसे अनेक गुणों का वर्णन किया है । आपका मानना है कि मानसिक स्वतंत्रता, निडरता, अध्यवसाय जैसे गुण ही किसी भी मनुष्य को उन्नति के लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं ।

मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक-न-एक नया अगुआ ढूँढ़ा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं, वे आत्मसंस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते । उन्हें स्वयं विचार करना, अपनी सम्मति आप स्थिर करना, दूसरों की उचित बातों का मूल्य समझते हुए भी उनका अंधभक्त न होना सीखना चाहिए । तुलसीदास जी को लोक में जो इतनी सर्वप्रियता और कीर्ति प्राप्त हुई, उनका दीर्घ जीवन जो इतना महत्त्वमय और शांतिमय रहा, सब इसी मानसिक स्वतंत्रता, निर्द्‌वंद्‌वता और आत्मनिर्भरता के कारण ।

एक इतिहासकार कहता है-'प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में है । प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन निर्वाह श्रेष्ठ रीति से कर सकता है । यही मैंने किया है, इसे चाहे स्वतंत्रता कहो, चाहे आत्मनिर्भरता कहो, चाहे स्वावलंबन कहो जो कुछ कहो, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से राम-लक्ष्मण ने घर से निकल बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों पर विजय प्राप्त की । यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से हनुमान जी ने अकेले सीता जी की खोज की । यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से कोलंबस ने अमरीका महाद्‌वीप ढूँढ़ निकाला ।

इसी चित्तवृत्ति की दृढ़ता के सहारे दरिद्र लोग दरिद्रता और अपढ़ लोग अज्ञता से निकलकर उन्नत हुए हैं तथा उद्‌योगी और अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्‌धि का मार्ग निकाला है । इसी चित्तवृत्ति के आलंबन से पुरुष सिंहों में यह कहने की क्षमता आई हुई है, 'मैं राह ढूँढ़ूँगा या राह निकालूँगा ।' यही चित्तवृत्ति थी जिसकी उत्तेजना से शिवाजी महाराज ने थोड़े वीर मराठा सिपाहियों को लेकर औरंगजेब की बड़ी भारी सेना पर छापा मारा और उसे तितर-बितर कर दिया । यही चित्तवृत्ति थी जिसके सहारे एकलव्य बिना किसी गुरु या संगी-साथी के जंगल के बीच निशाने पर तीर पर तीर चलाता रहा और अंत में एक बड़ा धनुर्धर हुआ । यही चित्तवृत्ति है जो मनुष्य को सामान्य जनों से उच्च बनाती है, उसके जीवन को सार्थक और उद्‌देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों को ग्रहण करने योग्य बनाती है । जिस मनुष्य की बुद्‌धि और चतुराई उसके हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है, वह जीवन और कर्मक्षेत्र में स्वयं भी श्रेष्ठ और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है ।

—०—

मौलिक सृजन

'श्रम से आत्मप्रतिष्ठा प्राप्त होती है', कथन को उदाहरणों द्‌वारा स्पष्ट करो ।

संभाषणीय

'स्वावलंबन' विषय पर कक्षा में गुट चर्चा करो । गुट-चर्चा की संक्षेप में जानकारी बताओ ।

लेखनीय

किसी विषय पर कहानी/निबंध लिखने हेतु आलंकारिक शब्द, सुवचन, मुहावरे, कहावतें आदि को समझते हुए सूची बनाओ और अपना लेखन प्रभावपूर्ण बनाओ ।

पठनीय

'स्वतंत्रता' से संबंधित कहानी, घटना, प्रसंग का वाचन करो ।

श्रवणीय

पाठ्‌यसामग्री तथा पठन की अन्य सामग्री को उचित विराम, बलाघात, शुद्‌ध, स्पष्ट उच्चारण की ओर ध्यान देते हुए सुनो और अपने मित्रों को सुनाओ ।

शब्द वाटिका

टरै = हटना, टलना
लक्ष्य = ध्येय, मंजिल
अध्यवसायी = उद्‌यमशील, उत्साही
चित्तवृत्ति = चित्त की अवस्था, मन का भाव

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

तुलसीदास जी को सर्वप्रियता और कीर्ति प्राप्त होने के कारण
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(३) कृति पूर्ण करो :

१. ऐतिहासिक व्यक्तित्व
- [ ]
- [ ]

२. आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक बातें
- [ ]
- [ ]

(२) नाम लिखो :–

१. अमेरिका महाद्‌वीप ढूँढ़ने वाला ⟶
२. सत्य की टेक न छोड़ने वाला ⟶

भाषा बिंदु

(अ) पाठ से विभिन्न कारकयुक्त वाक्य चुनकर तालिका बनाओ ।

(आ) कोष्ठक में दिए गए कारक चिह्नों में से उचित कारक चिह्न चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

१. चिड़िया डाल ---- बैठी है । (पर, में, से)
२. राधा बस ---- उतर गई । (से, में, को)
३. निहार के मन ---- संदेह उत्पन्न हुआ । (से, के, में)
४. शमा बिरयानी बनाने ---- चावल खरीद रही थी । (का, में, के लिए)
५. चाकू ---- फल काटा । (ने, को, से)

उपयोजित लेखन

पाठ्‌यपुस्तक से अपनी पसंद के दस वाक्यों का लिप्यंतरण रोमन लिपि में करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

सद्‌गुणों से संबंधित सुवचनों का संकलन करो ।

४. तुम मुझे खून दो

– नेताजी सुभाषचंद्र बोस

परिचय

जन्म : १८९७, कटक (उड़ीसा)
मृत्यु : १९४५ (अनुमानित)
परिचय : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रखर क्रांतिकारी नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी ने 'जय हिंद' और 'चलो दिल्ली' का उद्‌घोष देकर भारतीय सैनिकों में एक नया जोश भर दिया था । आपने अपने जीवनकाल में अनेक बार नौजवानों को संबोधित किया । आप भारतीय युवकों के प्रेरणास्रोत बन गए ।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक भारतीय यात्री' (An Indian pilgrim) (यह अपूर्ण आत्मकथा है ।), 'भारत का संघर्ष' (The Indian Struggle) (दो खंडों में)। स्वतंत्रता संघर्ष के संदर्भ में अगणित पत्र लिखे, भाषण दिए तथा रेडियो के माध्यम से भी व्याख्यान दिए जो संकलित किए गए हैं ।

गद्‌य संबंधी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वनामधन्य नेताजी सुभाषचंद्र बोस का योगदान अविस्मरणीय है । द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध के समय 'आजाद हिंद सेना' को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु युद्‌ध करने के लिए प्रेरित करते हुए आपने यह भाषण दिया था । आपका कहना था कि 'स्वतंत्रता की राह शहीदों के खून से ही बनती है । खून देकर ही आजादी की कीमत चुकाई जा सकती है ।' आपका आग्रह था कि देशवासियों को इसके लिए तत्पर रहना चाहिए ।

दोस्तो ! बारह महीने पहले पूर्वी एशिया में भारतीयों के सामने 'संपूर्ण सैन्य संगठन' या 'अधिकतम बलिदान' का कार्यक्रम पेश किया गया था । आज मैं आपको पिछले साल की हमारी उपलब्धियों का ब्योरा दूँगा तथा आने वाले साल की हमारी माँगें आपके सामने रखूँगा । ऐसा करने से पहले मैं आपको एक बार फिर यह एहसास कराना चाहता हूँ कि हमारे पास आजादी हासिल करने का कितना सुनहरा अवसर है ।

हमारे संघर्ष की सफलता के लिए मैं बहुत अधिक आशावादी हूँ क्योंकि मैं केवल पूर्व एशिया के ३० लाख भारतीयों के प्रयासों पर निर्भर नहीं हूँ । भारत के अंदर एक विराट आंदोलन चल रहा है तथा हमारे लाखों देशवासी आजादी हासिल करने के लिए अधिकतम दुख सहने और बलिदान के लिए तैयार हैं । दुर्भाग्यवश, सन १८५७ के महान संघर्ष के बाद से हमारे देशवासी निहत्थे हैं जबकि दुश्मन हथियारों से लदा हुआ है । आज के इस आधुनिक युग में निहत्थे लोगों के लिए हथियारों और एक आधुनिक सेना के बिना आजादी हासिल करना नामुमकिन है । अब जरूरत सिर्फ इस बात की है कि अपनी आजादी की कीमत चुकाने के लिए भारतीय स्वयं आगे आएँ ! 'संपूर्ण सैन्य संगठन' के कार्यक्रम के अनुसार मैंने आपसे जवानों, धन और सामग्री की माँग की थी । मुझे आपको बताने में खुशी हो रही है कि हमें पर्याप्त संख्या में रंगरूट मिल गए हैं । हमारे पास पूर्वी एशिया के हर कोने से रंगरूट आए हैं-चीन, जापान, इंडोचीन, फिलीपींस, जावा, बोर्नियों, सेलेबस, सुमात्रा, मलाया, थाईलैंड और बर्मा से ।

आपको और अधिक उत्साह एवं ऊर्जा के साथ जवानों, धन तथा सामग्री की व्यवस्था करते रहना चाहिए, विशेष रूप से आपूर्ति और परिवहन की समस्याओं का संतोषजनक समाधान होना चाहिए । सबसे बड़ी समस्या युद्‌धभूमि में जवानों और सामग्री की कुमक पहुँचाने की है । यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम मोर्चों पर अपनी कामयाबी को जारी रखने की आशा नहीं कर सकते, न ही हम भारत के आंतरिक भागों तक पहुँचने में कामयाब हो सकते हैं ।

आपमें से उन लोगों को, जिन्हें आजादी के बाद देश के लिए काम जारी रखना है, यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पूर्वी एशिया-विशेष रूप से बर्मा हमारे स्वातंत्र्य संघर्ष का आधार है । यदि आधार मजबूत नहीं है तो हमारी लड़ाकू सेनाएँ कभी विजयी नहीं होंगी । याद रखिए कि यह एक 'संपूर्ण युद्ध' है- केवल दो सेनाओं के बीच का युद्ध नहीं है, इसीलिए पिछले पूरे एक वर्ष से मैंने पूर्व में 'संपूर्ण सैन्य संगठन' पर इतना जोर दिया है । मेरे यह कहने के पीछे कि आप घरेलू मोर्चे पर और अधिक ध्यान दें, एक और भी कारण है । आने वाले महीनों में मैं और मंत्रिमंडल की युद्ध समिति के मेरे सहयोगी युद्ध के मोर्चे पर और भारत के अंदर क्रांति लाने के लिए भी अपना सारा ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं । इसीलिए हम इस बात को पूरी तरह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमारी अनुपस्थिति में भी कार्य निर्बाध चलता रहे ।

साथियो, एक वर्ष पहले, जब मैंने आपके सामने कुछ माँगें रखी थीं, तब मैंने कहा था कि यदि आप मुझे 'संपूर्ण सैन्य संगठन' दें तो मैं आपको एक 'दूसरा मोर्चा' दूँगा । मैंने अपना वह वचन निभाया है । हमारे अभियान का पहला चरण पूरा हो गया है । हमारी विजयी सेनाओं ने निप्पोनीज सेनाओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर शत्रु को पीछे धकेल दिया है और अब वे हमारी प्रिय मातृभूमि की पवित्र धरती पर बहादुरी से लड़ रही हैं । अब जो काम हमारे सामने है, पूरा करने के लिए कमर कस लें । मैंने आपसे जवानों, धन और सामग्री की व्यवस्था करने के लिए कहा था । मुझे वे सब भरपूर मात्रा में मिल गए हैं । अब मैं आपसे कुछ और चाहता हूँ । जवान, धन और सामग्री अपने आप विजय या स्वतंत्रता नहीं दिला सकते । हमारे पास ऐसी प्रेरक शक्ति होनी चाहिए, जो हमें बहादुर व नायकोचित कार्यों के लिए प्रेरित करे ।

सिर्फ इस कारण कि अब विजय हमारी पहुँच में दिखाई देती है, आपका यह सोचना कि आप जीते-जी भारत को स्वतंत्र देख ही पाएँगे, आपके लिए एक घातक गलती होगी । यहाँ मौजूद लोगों में से किसी के मन में स्वतंत्रता के मीठे फलों का आनंद लेने की इच्छा नहीं होनी चाहिए । एक लंबी लड़ाई अब भी हमारे सामने है । आज हमारी केवल एक ही इच्छा होनी चाहिए-मरने की इच्छा, जिससे स्वतंत्रता की राह शहीदों के खून से बनाई जा सके । साथियो, स्वतंत्रता युद्ध के मेरे साथियो ! आज मैं आपसे एक ही चीज माँगता हूँ; सबसे ऊपर मैं आपसे अपना खून माँगता हूँ । यह खून ही उस खून का बदला लेगा, जो शत्रु ने बहाया है । खून से ही आजादी की कीमत चुकाई जा सकती है । तुम मुझे खून दो और मैं तुमसे आजादी का वादा करता हूँ ।

—०—

मौलिक सृजन

स्वाधीनता संग्राम में सुभाषचंद्र बोस का संगठक के रूप में कार्य लिखो ।

संभाषणीय

१८९३ की शिकागो की सर्वधर्म परिषद में विवेकानंद जी के भाषण के मुख्य मुद्दों पर चर्चा करो ।

लेखनीय

किसी कविता, कहानी के उद्देश्य का आकलन करो और अन्य मुद्दों को समझते हुए अर्थ का प्रभावपूर्ण लेखन करो ।

पठनीय

किसी अपरिचित/परिचित व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति करो और अपने सहपाठियों के गुट में पढ़कर सुनाओ ।

श्रवणीय

दूरदर्शन, रेडियो, सी.डी. पर राष्ट्रीय चेतना के गीत सुनो और सुनाओ ।

शब्द वाटिका

ब्योरा = विवरण
एहसास = अनुभव
रंगरूट = नया सिपाही
आंतरिक = भीतरी
सुचारु = बहुत सुंदर, सही ढंग
निर्बाध = निरंतर, सतत
घातक = विनाशक

मुहावरे

कंधे-से-कंधा मिलाना = डटकर सहयोग देना
कमर कसना = तैयार होना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

पाठ में आए देश

(२) उत्तर लिखो :

१. भारतीयों के सामने पेश किया गया कार्यक्रम ....
२. पूर्वी एशिया के हर कोने से आए हुए ....
३. स्वतंत्रता की राह इससे बनाई जा सकेगी ....
४. हमारे स्वातंत्र्य संघर्ष का आधार ....

(३) टिप्पणी लिखो :

१. नेताजी सुभाषचंद्र बोस की माँग और वादा

भाषा बिंदु

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के काल के भेद लिखो :

१. बच्चे अब घर आ रहे होंगे । ______________________
२. हम अल्मोड़ा पहुँच रहे थे । ______________________
३. भारत के अंदर एक विराट आंदोलन चल रहा है । ______________________
४. उदयशंकर ने अपनी नृत्यशाला यहीं बनाई थी । ______________________
५. हमें पर्याप्त संख्या में रंगरूट मिल गए हैं । ______________________
६. आप जीते-जी भारत को स्वतंत्र देख ही पाएँगे । ______________________
७. मैं तुमसे आजादी का वादा करता हूँ । ______________________
८. बच्चों को आप भूख से तड़पते देखे होंगे । ______________________

उपयोजित लेखन

निबंध लिखो – मेरा प्रिय वैज्ञानिक

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

कैप्टन लक्ष्मी की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करके लिखो ।

I6H6XY

५. संतवाणी

– संत मीराबाई
– गोस्वामी तुलसीदास

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे ।
मैं तो मेरे नारायण की अपहिं हो गइ दासी रे ।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे ।।
बिष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे ।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर सहज मिले अविनासी रे ।।

दरस बिन दूखण लागे नैन ।
जबसे तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहुँ न पायो चैन ।।
सबद सुणत मेरी छतियाँ काँपै मीठे लागे बैन ।
बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी बह गई करवत ऐन ।।
कल न परत पल-पल मग जोवत भई छमासी रैन ।
'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे दुख मेटण सुख दैन ।।

संत मीराबाई

× × ×

पुरतें निकसीं रघुबीर बधू,
धरि धीर दए मग में डग द्वै ।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकी,
पुट सूखि गए मधुराधर वै ।
फिरि बूझति हैं, चलनो अब केतिक,
पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै ?
तियकी लखि आतुरता पिय की,
अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै ।।

जल को गए लक्खन, हैं लरिका,
परिखौ, पिय ! छाँह घरीक है ठाढ़े ।
पोंछि पसेउ बयारि करौं,
अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ।।
'तुलसी' रघुबीर प्रिया श्रम जानि कै,
बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े ।
जानकी नाह को नेहु लख्यो,
पुलक्यो तनु, बारि बिलोचन बाढ़े ।।

गोस्वामी तुलसीदास

परिचय

जन्म : १४९८, चौकड़ी ग्राम (राजस्थान)
मृत्यु : १५४६, द्वारिका (गुजरात)
परिचय : मीराबाई बचपन से ही भगवान कृष्ण के प्रति अनुरक्त थीं । आप साधुओं के साथ कीर्तन-भजन करती थीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'राम गोविंद', 'राग सोरठा के पद', 'गीतगोविंद' 'मीरा पदावली' आदि ।

× × ×

जन्म : १५११, एटा (उ.प्र.)
मृत्यु : १६२३, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : तुलसीदास जी का मूल नाम 'रामबोला' था । आप द्वारा रचित 'रामचरितमानस' महाकाव्य विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'दोहावली', 'कवितावली' आदि ।

पद्य संबंधी

संत मीराबाई – प्रस्तुत पद में संत मीराबाई की कृष्णभक्ति का वर्णन किया है । अपने प्रभु को मिलने की जो आस मीरा के हृदय में है उसी का सुंदर वर्णन पदों में किया है ।

गोस्वामी तुलसीदास– प्रस्तुत पद 'कवितावली' से लिए गए हैं । यहाँ सीता जी की थकान, श्रीराम की व्याकुलता, शरीर सौष्ठव का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है ।

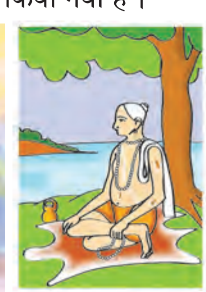

शब्द वाटिका

बावरी = पागल
पग = पैर
सबद = शब्द
निकसीं = निकली
डग = कदम
छमासी = छह महीने
अविनासी = कभी भी नष्ट न होने वाला
भाल = माथा
चारु = सुंदर
लरिका = लड़का, बालक
परिखौ = इंतजार करना, राह देखना
पसेउ = पसीना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

कृष्ण प्रेम में मीरा की स्थिति

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

कृष्ण विरह में मीरा की स्थिति

(३) संजाल पूर्ण करो :

सीता की थकान दर्शाने वाले शब्द

(४) लिखो :

पद्‌यांश में आए इस अर्थवाले शब्द

१. नयन -
२. काँटा -
३. सुंदर -
४. शरीर -

(५) पद की दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो ।

भाषा बिंदु

अ) दूसरी इकाई के गद्‌यपाठों में आए दस-दस स्त्रीलिंग, पुल्लिंग शब्दों की सूची बनाकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो ।

आ) पाठों में प्रयुक्त दस मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

अंतरशालेय नाट्‌यस्पर्धा में नाटक का मंचन करने हेतु रंगभूषा भंडार के व्यवस्थापक को पात्रों के अनुरूप आवश्यक वेशभूषाओं की माँग करते हुए पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

महाराष्ट्र के किन्हीं दो संतों की सचित्र जानकारी प्राप्त करो ।

कल्पना पल्लवन

'वृक्ष हैं मेरे हाथ, मत काटो इसे' धरती के मन के इस भाव को अपने शब्दों में लिखो ।

I6R2ZL

६. प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण 'अल्मोड़ा'

– *डॉ. इसरार 'गुनेश'*

गरमी की छुट्टियाँ शुरू हो गईं, मैं बच्चों के साथ एक रात छत पर बैठा था, सारे बच्चे कहीं बाहर घूमने जाने के लिए उत्साहित थे । कहने लगे–'अप्पी ! क्यों न इस बार किसी पहाड़ की यात्रा का प्लान बनाएँ ?' बच्चे तुरंत मानचित्र उठा लाए और मनपसंद स्थान की खोज शुरू हो गई । चर्चा के बाद उत्तराखंड के कुमाऊँ मंडल जाना तय हुआ । कुमाऊँ मंडल अपनी प्राकृतिक सुषमा और सुंदरता के लिए विख्यात है ।

अब तनिष्क, तेजस, भावेश, श्रुति और मैं, हम सबने यात्रा की सूची बनाकर पूरी योजना बनाई । जिज्ञासावश तनु ने सवाल किया–'अप्पी, कुमाऊँ कहाँ है ? कुछ बताइए न ।' तब मैंने बताया, कुमाऊँ मंडल भारत के उत्तराखंड राज्य के दो प्रमुख मंडलों में से एक है । कुमाऊँ मंडल के अंतर्गत अल्मोड़ा, बागेश्वर, चंपावत, नैनीताल, पिथौरागढ़ तथा उधमसिंह नगर आते हैं । सांस्कृतिक वैभव, प्राकृतिक सौंदर्य और संपदा से संपन्न इस अंचल की एक क्षेत्रीय पहचान है । यहाँ के आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, प्रथा-परंपरा, रीति-रिवाज, धर्म-विश्वास, गीत-नृत्य, भाषा-बोली सबका एक विशिष्ट स्थानीय रंग है । लोक साहित्य की यहाँ समृद्ध वाचिक परंपरा विद्‌यमान है । कुमाऊँ का अस्तित्व भी वैदिक काल से ही है ।

अब जाने का दिन आया । बड़े सबेरे उठकर सबने तैयारी की और चल पड़े अपनी यात्रा पर । हम सर्वप्रथम नैनीताल पहुँचे, हमारे कॉटेज बुक थे । वहाँ के तालों, प्राकृतिक सुषमा एवं मौसम का आनंद ले हम अल्मोड़ा के लिए रवाना हुए । देवदार के वृक्षों से ढकी मोहक घाटियों के बीच सर्पीली सड़क पर हमारी कार तेज रफ्तार से दौड़ रही थी । रास्ते में पहाड़ों पर बने सीढ़ीनुमा खेत और उसमें काम करते लोग । श्रम से अपनी जीविका चलाने वालों के चेहरों पर अजीब-सी अलमस्ती और निश्चिंतता झलकती है । दूसरे दिन सुबह हम सब तैयार होकर अल्मोड़ा देखने निकले । जैसा पढ़ा या सुना था वैसा ही यहाँ देखने को भी मिल रहा था । राजा कल्याणचंद द्‌वारा स्थापित अल्मोड़ा, घोड़े की नाल के आकार के अर्धगोलाकार पर्वत शिखर पर बसा है । चीड़ एवं देवदार के घने पेड़, हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों ने आज भी इसके प्राचीन स्वरूप को सँजोए रखा है । अल्मोड़ा के बस स्टैंड के पास ही गोविंदवल्लभ पंत राजकीय संग्रहालय में कुमाऊँ के इतिहास व संस्कृति की झलक मिलती है । यहाँ विभिन्न स्थानों से खुदाई में मिली पुरातन प्रतिमाओं तथा

परिचय

जन्म : १९४९, बुंदेलखंड(म.प्र.)
परिचय : गुनेश जी जिला एवं सत्र न्यायालय में वकील हैं । आप १९६५ से विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेखन तथा संपादन का कार्य कर रहे हैं । आप कई शोध पत्रिकाओं के संपादक हैं ।
कृतियाँ : 'तसव्वुरात की दुनिया', 'इस्लाम कब, क्यूँ और कैसे', 'योग से नमाज तक' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत यात्रा वर्णन के माध्यम से लेखक ने उत्तराखंड के अनेक जिलों, उनके सांस्कृतिक वैभव, प्राकृतिक सौंदर्य, वहाँ के लोगों की जीवन पद्‌धति का वर्णन किया है ।

मौलिक सृजन

विश्व के प्रसिद्‌ध किन्हीं पाँच जलप्रपातों की सचित्र जानकारी का संकलन करो ।

स्थानीय लोककलाओं का अनूठा संगम है। 'ब्राइट एंड कार्नर' यह अल्मोड़ा के बस स्टेशन से केवल दो किमी. की दूरी पर एक अद्‌भुत स्थल है । इस स्थान से उगते और डूबते हुए सूर्य के दृश्य देखने हजारों मील से प्रकृति प्रेमी आते हैं । रात हमने पहाड़ी भोजन का आस्वाद लिया। तीसरे दिन सवेरे अल्मोड़ा से पाँच किमी दूरी पर स्थित काली मठ चल दिए। काली मठ ऐसा स्थान है जहाँ से अल्मोड़ा की खूबसूरती को जी भरकर निहारा जा सकता है । काली मठ के पास ही कसार देवी मंदिर है, वहाँ से हम 'बिनसर' गए ।

'बिनसर' अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्‌ध है । गाइड ने बताया-'बिनसर' का अर्थ भगवान शिव है। सैकड़ों वर्ष पुराना नंदादेवी मंदिर अपनी दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियों के लिए प्रसिद्‌ध है । यहाँ पर स्थित 'गणनाथ' एक प्रसिद्‌ध शिव मंदिर है । वहाँ से हम सब पहुँचे तीन सौ वर्ष पुराना सूर्य मंदिर देखने । कोणार्क के बाद देश का दूसरा महत्त्वपूर्ण सूर्य मंदिर है । यह अल्मोड़ा से सत्रह किमी की दूरी पर है । कुमाऊँ के लोगों की अटूट आस्था का प्रतीक है गोलू चितई मंदिर । इस मंदिर में पीतल की छोटी-बड़ी घंटियाँ ही घंटियाँ टँगी मिलती हैं । वहाँ से हम 'जोगेश्वर' मनोहर घाटी, जो देवदार के वृक्षों से ढँकी है, देखने गए । अल्मोड़ा सुंदर, आकर्षक और अद्‌भुत है इसीलिए उदयशंकर ने अपनी 'नृत्यशाला' यहीं बनाई थी । वहाँ विश्वविख्यात नृत्यकार शिशुओं ने नृत्य कला की प्रथम शिक्षा ग्रहण की थी । उदयशंकर की तरह विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर को भी अल्मोड़ा पसंद था । विश्व में वेदांत का शंखनाद करने वाले स्वामी विवेकानंद अल्मोड़ा में आकर अत्यधिक प्रसन्न हुए । उन्हें यहाँ आत्मिक शांति मिली थी।

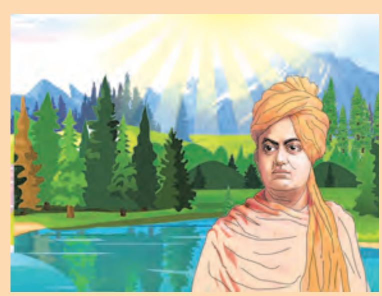

मैंने बच्चों को बताया-कुमाऊँनी संस्कृति का केंद्र अल्मोड़ा है । कुमाऊँ के सुमधुर गीतों और उल्लासप्रिय लोकनृत्यों की वास्तविक झलक अल्मोड़ा में ही दिखाई देती है । कुमाऊँ भाषा का प्रामाणिक स्थल भी यही नगर है । कुमाऊँनी वेशभूषा का असली रूप अल्मोड़ा में ही दिखाई देता है । आधुनिकता के दर्शन भी अल्मोड़ा में होते हैं । यहाँ का पहाड़ी भोजन, मिठाई और सिंगौड़ी प्रसिद्‌ध हैं।

सारे प्राकृतिक दृश्यों को हृदय और कैमेरे में कैद कर हम सब गांधीजी के प्रिय स्थल कौसानी के लिए अगले दिन रवाना हो गए ।

०

श्रवणीय

पर्यटन के अपने अनुभव कक्षा में सुनाओ तथा मित्र के अनुभव सुनो ।

संभाषणीय

'पर्यटन से होने वाले लाभ' विषय पर चर्चा करो ।

लेखनीय

भारत के वनों में पाए जाने वाले इमारती लकड़ीवाले वृक्षों के नाम, उनके उपयोग, विशेषताएँ आदि का लिखित संकलन करो ।

पठनीय

देश की सीमा पर लड़ने वाले वीर जवानों के अनुभव/ 'कारगिल युद्‌ध' के रोमांचकारी प्रसंग पढ़ो ।

शब्द वाटिका

विख्यात = प्रसिद्‌ध, मशहूर
सुषमा = सुंदरता
विद्‌यमान = उपस्थित, मौजूद
पुरातन = प्राचीन, पूर्वकालीन

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) सूची बनाओ :

अल्मोड़ा इनके आकर्षण का केंद्र है	
१.	
२.	
३.	
४.	

(२) कृति पूर्ण करो :

अल्मोड़ा के दर्शनीय स्थल

----

(३) संक्षेप में लिखो :

१. अल्मोड़ा तक पहुँचाने वाले मार्ग का वर्णन

२.बिनसर के मंदिरों का वर्णन

भाषा बिंदु

(अ) निर्देशित सूचना के अनुसार परिवर्तन करके लिखो :

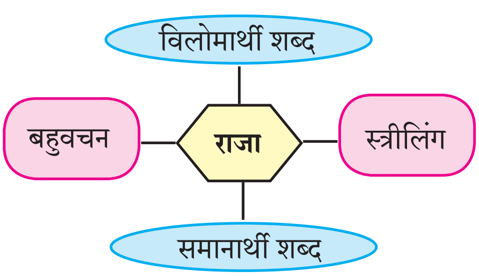

(आ) कहावतें और मुहावरों के अर्थों की जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ'	'आ'
१. अकल बड़ी या भैंस	(अ) निश्चिंत होकर सोना
२. ऊँट के मुँह में जीरा	(ब) अपमानित होना
३. घोड़े बेचकर सोना	(क) बुद्‌धि बल से बड़ी है
४. चार चाँद लगाना	(ड) व्यर्थ समय बर्बाद करना
५. चुल्लू भर पानी में डूब मरना	(इ) जरुरत से बहुत कम
	(फ) किसी चीज को सुंदर बनाना

उपयोजित लेखन

चाँद और सूरज में होनेवाला संवाद लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

आसाम/मेघालय के लोकजीवन संबंधी जानकारी का फोल्डर बनाओ ।

I6ZY29

७. सम्मेलन अंगों का

– श्रीप्रसाद

परिचय

जन्म : १९३२, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०१२
परिचय : बाल साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध श्रीप्रसाद जी ने संपूर्ण जीवन बाल साहित्य के लिए समर्पित कर दिया । आपने शिशुगीत, बालगीत प्रचुर मात्रा में लिखे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मेरे प्रिय शिशुगीत', 'मेरा साथी घोड़ा', 'खिड़की से सूरज', 'आ री कोयल', 'अक्कड़-बक्कड़ का नगर', 'सीखो अक्षर गाओ गीत', 'गाओ गीत पाओ सीख', 'गीत-गीत में पहेलियाँ' (कविता संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने बड़े ही रोचक ढंग से यह स्पष्ट किया है कि शरीर के अंगों में से किसी को निम्न या उच्च नहीं मानना चाहिए । अंगों का आपसी सहयोग ही महत्त्वपूर्ण है । निहितार्थ है कि जिस तरह सभी अंगों के सामंजस्य से ही शरीर का कार्य अच्छे ढंग से होता है उसी तरह समाज के सभी वर्गों के सहयोग से ही इसकी उन्नति संभव है ।

सूत्रधार : सुनो, सज्जनो, सुनो ! एक सम्मेलन होगा ।
यह सम्मेलन है शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का । हाथ, पैर, मुँह, नाक, कान का, सम्मेलन बेढंगों का ।
(शरीर के विभिन्न अंग आते हैं । सूत्रधार फिर कहता है ।)
तो अब सम्मेलन जुटा, आए हैं सब अंग ।
पेट, कान के साथ है, पैर, आँख है संग ।
(दर्शकों से) दर्शक भाइयो, अब आप शांतिपूर्वक शरीर के अंगों का सम्मेलन देखिए । **(वह जाता है ।)**

पैर : हममें से किसी एक को सम्मेलन का अध्यक्ष बनाना चाहिए ।

हाथ : अध्यक्ष कोई नहीं होगा । कौन है बड़ा जो अध्यक्ष बने ?

कान : बिना अध्यक्ष के ही सम्मेलन शुरू कीजिए ।

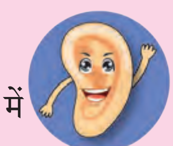

पेट : पर यह सम्मेलन हो क्यों रहा है ?

नाक : **(सभी हँसते हैं ।)** अरे, सबको पता है सम्मेलन में हम सब अपने कामों का बखान करेंगे । जिसका काम सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण होगा, वही बड़ा माना जाएगा ।

पैर : सबसे पहले हाथ महाशय अपना काम बताएँ ।

हाथ : भाइयो, बात यह है कि मनुष्य के शरीर का मैं सबसे श्रेष्ठ अंग हूँ । अपनी बात कहना अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना है । **(नाचते हुए)**
यह सुंदर-सी सारी दुनिया किसने कहो बनाई ?
बाग, बगीचे, खेत, द्‌वार पर जो दे रहा दिखाई ।

पैर : सभी जगह आदमी पहुँचता पैरों के ही बल पर । देखे गाँव, शहर देखे हैं पैरों से ही चलकर । बिना पैर के चल पाएगा कैसे कोई बोलो ! मुझसे कौन बड़ा है बतलाओ, मुँह खोलो ।

आँख : दुनिया की सुंदरता सारी, सुंदर सूरज किरणें प्यारी । जगमग तारे, चंदा मामा बड़े दुलारे । मैं ही तो सब दिखलाती हूँ, जीवन में खुशियाँ लाती हूँ ।

कान : क्या मेरी बात कोई नहीं सुनेगा ?

हाथ : क्यों नहीं ? तुम भी अपना गुण बखान लो । आखिर आँख जब अपने को ही बड़ा कहती है तो तुम क्यों पीछे रहो ।

कान : सुनो कान की बात, कान से करो न आनाकानी ।
बिना कान के राग-रागिनी किसने है पहचानी ?

बिना मदद के मेरी, संगीत सुनोगे कैसे ?

पैर : अच्छा नाक जी, अब आप अपना काम बताइए ।

नाक : **(नकियाते हुए)** मेरे बिना कोई कुछ सूँघ नहीं सकता । मैं ही खुशबू और बदबू का भेद करती हूँ । इतना ही कहती हूँ कि-नाक न कटने पाए, रखना ध्यान; सिर्फ यही देना है मुझको ज्ञान ।

जीभ : खूब सबने अपनी बड़ाई की । बुराई तो किसी में कुछ है ही नहीं । वाह ! **(थिरककर)**

मगर बताओ बिना जीभ के क्या कोई कुछ बोला । जीभ मिली थी, इसीलिए सबने अपना मुँह खोला । मगर बोलने के पहले अपनी बातों को तौलो । तो जनाब, जीभ शरीर के सब अंगों में बड़ी है ।

पेट : **(पेट पर हाथ फेरते हुए)** वाह ! भाई वाह ! सबने अपनी अच्छी बड़ाई की । अरे भैया, यह तो देख लेते कि पेट में ही खाना पहुँचता है । उसे पचाने से शरीर को बल मिलता है और उसी बल पर हाथ, पैर, नाक, कान, जीभ सब उछलते हैं । एक दिन मैं खाना न पचाऊँ, तो सब टें बोल जाएँ । समझ गए तुम मेरा काम, मुझे न कहना बुद्धूराम ।

चेहरा : अब तो मैं ही बचा हूँ जी । सबने अपने-अपने काम बता दिए हैं । लेकिन शरीर में जिसकी सुंदरता बखानी जाती है, वह चेहरा ही तो है । इस चेहरे को देख कभी तो-कोई कहता-फूल खिला । सुनो, ध्यान से मेरे भाई, चेहरा ही है चीज बड़ी । चेहरे में है नाक खड़ी । अधिक क्या कहूँ, बिना चेहरे के आदमी अधूरा है ।

नाक : **(नकियाते हुए)** हमने अपने-अपने काम तो बता दिए अपनी बड़ाई भी कर ली लेकिन सबमें बड़ा कौन ठहरा ?

सभी : **(एक साथ)** मैं बड़ा हूँ । मैं बड़ा हूँ । (सभी अंधों में काना राजा बनने की कोशीश कर रहे थे ।)

पेट : भाइयो, आप शांत रहिए । सबमें मैं ही बड़ा लगता हूँ ।

पैर : **(बात काटकर)** चुप रहिए, आप बड़े नहीं हैं । **(सूत्रधार आता है।)**

सूत्रधार : **(दर्शकों से)** और यही था हमारा सम्मेलन अंगों का । सबको धन्यवाद और नमस्कार । अंगों में बड़ा-छोटा कोई नहीं है । अंगों का बड़प्पन आपसी सहयोग में है ।

(परदा गिरता है ।)

—०—

मौलिक सृजन

अपने प्रिय खिलाड़ी के बारे में प्रेरक जानकारी लिखो ।

श्रवणीय

मीरा के पद दूरदर्शन, रेडियो, यू-ट्यूब, सी. डी. पर सुनो ।

संभाषणीय

रंगों का सम्मेलन या फलों का सम्मेलन, इस विषय पर हास्य कहानी प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

किसी नियत विषय पर आयोजित परिचर्चा, भाषण के विशेष उद्धरण, वाक्यों का प्रयोग करते हुए अपना लिखित मत प्रस्तुत करो ।

पठनीय

फलों के औषधीय गुण बताने वाला लेख पढ़ो ।

शब्द वाटिका

बखान = वर्णन
आनाकानी = टालमटोल

मुहावरे/कहावत

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना = स्वयं अपनी प्रशंसा करना
अंधों में काना राजा = मूर्ख मंडली में थोड़ा पढ़ा लिखा विद्वान और ज्ञानी माना जाता है

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) लिखो, किसने कहा है :

कथन	किसने कहा
''अध्यक्ष कोई नहीं होगा ।''	---------
''पर यह सम्मेलन हो क्यों रहा है ?''	---------
''चुप रहिए, आप बड़े नहीं हैं ।''	---------
''क्या मेरी बात कोई नहीं सुनेगा ?''	---------

(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

१. अब आप ------- शरीर के अंगों का सम्मेलन देखिए ! (शांतिपूर्वक, मन लगाकर, चुप बैठकर)
२. दुनिया की सुंदरता सारी, सुंदर ------- किरणें प्यारी । (चाँद, चंद्रमा, सूरज)

भाषा बिंदु

अ) निम्नलिखित वाक्यों के रचनानुसार भेद पहचानकर तथा दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय के सामने ☑ चिह्न लगाओ ।

१) अंगों में बड़ा-छोटा कोई नहीं है ।
 १. साधारण वाक्य ☐ मिश्र वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐

२) हम दोनों के पंख हैं और हम दोनों फूलों का रस चूसती हैं ।
 १. साधारण वाक्य ☐ मिश्र वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐

३) शेर एक जंगली पशु है जो जंगल का राजा कहलाता है ।
 १. साधारण वाक्य ☐ मिश्र वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐

आ) अर्थ के अनुसार वाक्यों के भेद लिखकर प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखो ।

उपयोजित लेखन 'दूरदर्शन से लाभ-हानि' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित मुहावरों की अर्थ सहित सूची बनाओ ।

I79U3H

८. जिंदगी का सफर

– नंदलाल पाठक

सफर में जिंदगी के कितना कुछ सामान रहता है,
वो खुशकिस्मत है, जिसका हमसफर ईमान रहता है ।

सुखी वह है, जमीं से जो जुड़ा इनसान रहता है,
नदी चलती है झुककर, रास्ता आसान रहता है ।

मेरा परमात्मा मेरी तरह बिल्कुल अकेला है,
मुझे उसका, उसे मेरा हमेशा ध्यान रहता है ।

वे मरकर भी अमर हैं, प्यार है तप–त्याग से जिनको,
चला जाता है जब इनसान, तब बलिदान रहता है ।

मेरे भी पास यादों और सपनों के खजाने हैं,
भिखारी के भी घर में कुछ न कुछ सामान रहता है ।

जरूरी है करे नेकी तो खुद दरिया में डाल आए,
निराशा उसको होती है जो आशावान रहता है ।

ये दुनिया धर्मशाला है, यहाँ बस आना–जाना है,
यहाँ ऐसे रहो जैसे कोई मेहमान रहता है ।

०

परिचय

जन्म : १९२९, गाजीपुर (उ.प्र.)
परिचय : बनारस हिंदू विश्वविद्‍यालय से शिक्षा पूर्ण करने के बाद नंदलाल पाठक जी का अधिकांश जीवन मुंबई में शिक्षक के रूप में बीता । वर्तमान में आप महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष के रूप में हिंदी की सेवा कर रहे हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'धूप की छाँह', 'जहाँ पतझर नहीं होता' (कविता संग्रह), 'फिर हरी होगी धरा', 'गजलों ने लिखा मुझको' (हिंदी गजल संग्रह), 'भगवद्‍गीताः आधुनिक दृष्टि' (चिंतन) आदि ।

पद्‍य संबंधी

प्रस्तुत गजल के विभिन्न शेरों में गजलकार नंदलाल पाठक जी ने ईमान, विनम्रता, त्याग, बलिदान, परोपकार आदि गुणों को दर्शाया है । आपका मानना है कि यह दुनिया एक सराय की तरह है । यहाँ जीवों का आना–जाना सतत चलता रहता है ।

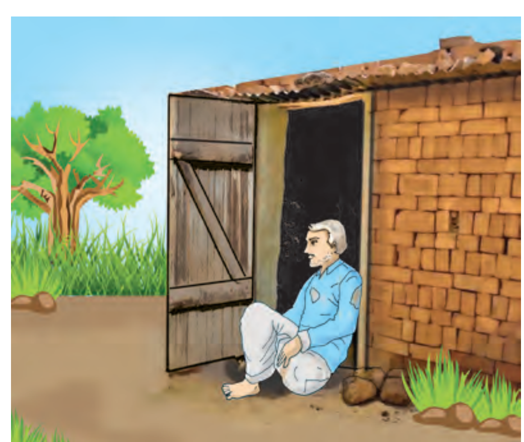

शब्द वाटिका

खुशकिस्मत = भाग्यवान
हमसफर = सहयात्री
दरिया = नदी

कहावत

नेकी कर दरिया में डाल = उपकार करके भूल जाना

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) कृति पूर्ण करो :

कवि के खजाने
- [ ]
- [ ]

(२) जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
जिंदगी	--------	अकेला
परमात्मा	--------	धर्मशाला
दुनिया	--------	प्यार
तप-त्याग	--------	सफर

(३) पंक्तियों का अर्थ लिखो :

१. निराशा उसको होती है जो आशावान होता है ।
२. सुखी वह है, जमीं से जो जुड़ा इंसान रहता है ।

कल्पना पल्लवन

'विनम्रता में वीरता समाहित है' विषय पर अपने विचार लिखो ।

भाषा बिंदु

(अ) पाठों में आए शब्दयुग्म ढूँढ़कर उनकी सूची बनाओ ।
(आ) शब्द शुद्ध करके लिखो : द्रुष्य, उनत्त, सघंर्श, मधुमख्की, औद्योगीक

उपयोजित लेखन

'यशवंत शैक्षिक सामग्री भंडार' के व्यवस्थापक को भूगोल विषय की शैक्षिक सामग्री की माँग करते हुए पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

व्यसनों से होने वाले दुष्परिणामों पर छह से आठ वाक्य लिखो ।

I7IQ5J

व्याकरण विभाग

शब्द भेद

(१) विकारी शब्द और उनके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी शब्द(अव्यय)

- क्रियाविशेषण अव्यय
- संबंधसूचक अव्यय
- समुच्चयबोधक अव्यय
- विस्मयादिबोधक अव्यय

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(४) वाक्य के प्रकार

रचना की दृष्टि से

१. साधारण
२. मिश्र
३. संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से

१. विधानार्थक
२. निषेधार्थक
३. प्रश्नार्थक
४. आज्ञार्थक
५. विस्मयादिबोधक
६. संदेशसूचक

(५) मुहावरों, कहावतों का प्रयोग/चयन करना

(६) वाक्य शुद्धीकरण

(७) सहायक क्रिया पहचानना

(८) प्रेरणार्थक क्रिया पहचानना

(९) कारक

(१०) विरामचिह्न

(११) वर्णविच्छेद

शब्द संपदा – (पाँचवीं से आठवीं तक)

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, सम्मोचारित मराठी-हिंदी, भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत-तद्धित बनाना, मूल शब्द अलग करना ।

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

✻ पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आज कल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

✻ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक ।

पत्र लेखन के प्रारूप

(१) औपचारिक पत्र का प्रारूप

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय : ....
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन
....
....
....
भवदीय/भवदीया,
नाम : ....
पता : ....
....
ई-मेल आईडी : ....

(२) अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

दिनांक : ....
संबोधन : ....
अभिवादन : ....

विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,
....

नाम : ....

पता : ....

ई-मेल आईडी : ....

गद्य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• दिए गए परिच्छेद (गद्यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में हों ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

❋ प्रश्न ऐसे हों : • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हो । • प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्मित गद्यांश में हों । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न का उत्तर नहीं लिखना है । • प्रश्न रचना पूरे गद्यांश पर होनी आवश्यक है ।

❋ वृत्तांत लेखन : वृत्तांत का अर्थ है– घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है । **वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :** • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का वर्णन अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्धति से हो ।

❋ कहानी लेखन : कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्दसीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्ध होनी चाहिए । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

❋ विज्ञापन : वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्वपूर्ण अंग है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हों । • नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है ।

❋ अनुवाद लेखन : एक भाषा का आशय दूसरी भाषा में लिखित रूप में व्यक्त करना ही अनुवाद कहलाता है । अनुवाद करते समय लिपि और लेखन पद्धति में अंतर आ सकता है परंतु आशय, मूलभाव को जैसे वैसे रखना पड़ता हैं ।

अनुवाद : शब्द, वाक्य और परिच्छेद का करना है ।

❋ निबंध लेखन : निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा 'सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लेखन प्रकार

- आत्मकथनात्मक
- वर्णनात्मक
- चरित्रात्मक
- कल्पनाप्रधान

भावार्थ– पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३३ : दूसरी इकाई, पाठ क्र ५.
संतवाणी–संत मीराबाई, गोस्वामी तुलसीदास

प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं –

पैरों में घुँघरू बाँध कर मीरा नाच रही है । मैं स्वयं नारायण की दासी बन गई हूँ । लोग कहते हैं कि मीरा बावरी हो गई है, सगे संबंधी कहते हैं कि मीरा कुल में कलंक लगाने वाली बन गई है । राणा जी ने विष का प्याला भेजा, जिसे मीरा हँसते–हँसते पी गई । मीराबाई कहती हैं कि मेरे अविनाशी ईश्वर, गोवर्धन पर्वत उठाने वाले मेरे प्रभु कृष्ण सहज ही मिलेंगे ।

मीराबाई कहती हैं कि प्रभु के दर्शन बिना मेरी आँखें दुखने लगी हैं । हे प्रभु जब से आप बिछड़ गए हैं तब से मुझे कभी शांति नहीं मिल रही है । कोयल, पपीहे के मीठे शब्द सुनते ही हृदय काँप उठता है और व्यंग्य के कठोर शब्द भी मीठे लगने लगे हैं । गोविंद के विरह में तड़पती रहती हूँ, रात में नींद नहीं आती, करवट बदलती रहती हूँ । हे सखी ! विरह के इस दुख को किससे कहूँ । रात–दिन चैन नहीं मिलता है । लगातार हरि (कृष्ण) के आने का रास्ता देखती रहती हूँ । रात मेरे लिए छह महीने के बराबर हो गई है । मीराबाई कहती हैं, हे प्रभु ! तुम मेरे दुख मिटाने वाले और आनंद दाता हो । मुझे कब तुम्हारे दर्शन होंगे ? तुम कब आकर मिलोगे ?

× × × ×

प्रस्तुत पद में तुलसीदास जी कहते हैं –

सीता जी अयोध्या से निकलकर धैर्यपूर्वक दो ही कदम मार्ग पर चली होंगी कि उनके माथे पर पसीने की बूँदें दिखाई पड़ीं और उनके होंठ सूख गए । उन्होंने प्रिय श्रीराम से पूछा कि अभी और कितना चलना है तथा पत्तों की कुटिया कहाँ बनाएँगे ? पत्नी सीता जी की थकान को देखकर श्रीराम की आँखों से आँसुओं की बूँदें चू पड़ीं ।

सीता जी ने श्रीराम से कहा कि जल लाने के लिए लक्ष्मण गए हैं । अभी वे बालक हैं । अतः थोड़ी देर छाँव में रुककर प्रतीक्षा कर लेते हैं । आपका पसीना पोंछकर मैं हवा कर देती हूँ । आपके पाँवों में जलन हो रही होगी, अतः उसे शीतल करने के लिए जल से पैरों को धो लीजिए । तुलसीदास कहते हैं कि रघुवीर श्रीराम, सीता जी को थकी हुई समझकर देर तक बैठकर पैर से काँटा निकालते रहे । उनके इस प्रेम को समझकर सीता जी पुलकित हो उठीं और उनकी आँखों से आँसुओं की धार बह चली ।

—— ० ——

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन अनुभव प्रक्रिया प्रारंभ करने से पहले पाठ्यपुस्तक में दी गई सूचनाओं, दिशा निर्देशों को भली-भाँति आत्मसात कर लें । भाषाई कौशल के विकास के लिए पाठ्यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', एवं 'लेखनीय' में दी गई है । पाठों पर आधारित कृतियाँ 'सूचना के अनुसार कृतियाँ करो' में आई हैं । पद्य में 'कल्पना पल्लवन', गद्य में 'मौलिक सृजन' के अतिरिक्त 'स्वयं अध्ययन' एवं 'उपयोजित लेखन' विद्यार्थियों के भाव/विचार विश्व, कल्पना लोक एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'मैंने समझा' में विद्यार्थी ने पाठ पढ़ने के बाद क्या आकलन किया है, इसे लिखने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना है । इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि हर पाठ के अतंर्गत दी गई कृतियों, उपक्रमों एवं स्वाध्यायों के माध्यम से भाषा विषयक क्षमताओं का सम्यक विकास हो, अतः आप इसकी ओर विशेष ध्यान दें ।

'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । सीधे परिभाषा न बताकर कृतियों और उदाहरणों द्‌वारा पाठ्यवस्तु की संकल्पना तक विद्यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आपके सबल कंधों पर है । 'पूरक पठन' सामग्री कहीं-न-कहीं पाठ को ही पोषित करते हुए विद्यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः पूरक पठन का अध्ययन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषाई खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश भी अपेक्षित है । पाठों के माध्यम से नैतिक, सामाजिक, संवैधानिक मूल्यों, जीवन कौशल, केंद्रीय तत्त्वों के विकास के अवसर भी विद्यार्थियों को प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, संदर्भों एवं स्वाध्यायों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । विद्यार्थी कृतिशील, स्वयंअध्ययनशील, गतिशील बने । ज्ञानरचना में वह स्वयंस्फूर्त भाव से रुचि ले सके इसका आप सतत ध्यान रखेंगे ऐसी अपेक्षा है ।

पूर्ण विश्वास है कि आप सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुगमभारती इयत्ता ८ वी

₹ 30.00